घटती घटना

सत्य के साथ...जनहित में बात...

www.ghatatighatana.com अम्बिकापुर,वर्ष 22, अंक - 202- रविवार 24 - मई 2026,पृष्ठ - 8 मूल्य 2 रूपये RNI Reg.No.- CHHHIN/2004/15050,डाक पंजीयन. क्रं. 13/Surguja DN/ 2026-2028

प्रधानमंत्री ने 19वें रोजगार मेले में 51 हजार युवाओं को सौंपे नियुक्ति पत्र....

विकसित भारत में युवाओं की होगी बड़ी भूमिका : पीएम मोदी

नई दिल्ली,23 मई 2026। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने शनिवार को वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से आयोजित 19वें रोजगार मेले में 51 हजार से अधिक युवाओं को केंद्र सरकार की नौकरियों के लिए नियुक्ति पत्र सौंपे। उन्होंने कहा कि देश का युवा विकसित भारत के निर्माण में अहम भूमिका निभाने वाला है और आने वाले वर्षों में नई अर्थव्यवस्था तथा टेक्नोलॉजी आधारित क्षेत्रों में रोजगार के बड़े अवसर पैदा होंगे।

प्रधानमंत्री ने कहा कि आज का दिन देशभर के हजारों युवाओं और उनके परिवारों के लिए बेहद महत्वपूर्ण है। नियुक्ति पाने वाले युवा रेलवे, बैंकिंग, रक्षा, स्वास्थ्य,शिक्षा और अन्य क्षेत्रों में नई जिम्मेदारियां संभालने जा रहे हैं तथा वे देश की विकास यात्रा के जिम्मेदार भागीदार बनेंगे। मोदी ने कहा कि हाल ही में उनकी पांच देशों की यात्रा के दौरान दुनिया की बड़ी कंपनियों के प्रमुखों से विस्तृत चर्चा हुई और हर जगह भारत के युवाओं तथा देश की तकनीकी प्रगति को लेकर उत्साह दिखा। उन्होंने कहा कि दुनिया भारत की विकास यात्रा का हिस्सा बनना चाहती है और भारत विभिन्न देशों के साथ साझेदारी बढ़ाकर युवाओं के लिए नए अवसर तैयार कर रहा है।

प्रधानमंत्री ने कहा कि क्लीन एनर्जी, क्रिटिकल मिनरल्स,ग्रीन हाइड्रोजन और सस्टेनेबल मैन्युफैक्चरिंग जैसे क्षेत्र तेजी से आगे बढ़ रहे हैं। स्वीडन, नॉर्वे और इटली जैसे देशों के साथ ग्रीन ट्रांजिशन और सस्टेनेबल टेक्नोलॉजी में सहयोग बढ़ने से भारत भविष्य की क्लीन मैन्युफैक्चरिंग इंडस्ट्री में मजबूत होगा। यूएई और नॉर्वे के साथ साझेदारी से भारत का शिपबिल्डिंग इकोसिस्टम भी मजबूत होगा, जिससे इंजीनियरों,टेक्निशियनों और स्किल्ड वर्कर्स की मांग बढ़ेगी। मोदी ने कहा कि गांवों में बढ़ती कनेक्टिविटी से किसानों,छोटे व्यापारियों और विद्यार्थियों के लिए नए अवसर खुले हैं। उन्होंने नारी शक्ति की बढ़ती भागीदारी का उल्लेख करते हुए कहा कि आज बड़ी संख्या में महिला-नेतृत्व वाले स्टार्टअप सामने आ रहे हैं और मुद्रा योजना के तहत करोड़ों महिलाओं को आर्थिक सहायता मिली है। प्रधानमंत्री ने युवाओं से सार्वजनिक सेवा को राष्ट्रसेवा और जनसेवा का माध्यम मानकर कार्य करने का आह्वान किया। उल्लेखनीय है कि देशभर में आयोजित 18 रोजगार मेलों के माध्यम से अब तक करीब 12 लाख नियुक्ति पत्र वितरित किए जा चुके हैं। 19वां रोजगार मेला देश के 47 स्थानों पर आयोजित किया गया। इस दौरान चयनित अभ्यर्थियों को रेल, गृह, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, वित्तीय सेवा विभाग और उच्च शिक्षा विभाग समेत विभिन्न मंत्रालयों एवं विभागों में नियुक्ति दी गई।

सेमीकंडक्टर तकनीक से वैश्विक नेतृत्व की ओर

पीएम मोदी ने कहा-भारत का लक्ष्य विकसित भारत 2047 के विजन के साथ आगे बढ़ना है। इसके लिए देश हर क्षेत्र में लगातार निवेश कर रहा है, जिससे नए रोजगार पैदा हो रहे हैं। खासकर सेमीकंडक्टर क्षेत्र में पूरी सप्लाई चेन तैयार की जा रही है और आने वाले समय में भारत की 10 प्रमुख सेमीकंडक्टर इकाइयाँ वैश्विक स्तर पर अपनी पहचान बनाएंगी।

दिल्ली एयरपोर्ट पर 48 करोड़ का मादक पदार्थ पकड़ा गया,दो ड्रग तस्कर गिरफ्तार

नई दिल्ली,23 मई 2026। इंदिरा गांधी अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर कस्टम विभाग ने बड़ी मात्रा में मादक पदार्थ के साथ तस्करों को गिरफ्तार किया है। थाईलैंड के रहने वाले दो यात्री मादक पदार्थ के लिए एयरपोर्ट पर पहुंचे थे,जिसकी कीमत 48 करोड़ बताई जा रही है। कस्टम विभाग के अनुसार, नई दिल्ली के आईजीआई हवाई अड्डे पर सीमा शुल्क अधिकारियों ने बैंकॉक की फ्लाइट (एआई-2356) से शुक्रवार को आ रहे दो थाईलैंड के यात्रियों को सीमा शुल्क ग्रीन चैनल पार करने के बाद रोका। विशिष्ट प्रोफाइलिंग इनपुट और संदिग्ध यात्रा संकेतों के आधार पर सीमा शुल्क अधिकारियों ने दोनों यात्रियों के सामान की जांच की।

जांच के दौरान हाइड्रोपोनिक वीड (गांजा) होने के संदेह वाले छह (6) वैक्यूम-सील्ड पैकेट बरामद हुए। लगभग 29 किलोग्राम वजन के चार पैकेट एक यात्री के सामान से बरामद किए गए, जबकि लगभग 19 किलोग्राम वजन के दो पैकेट दूसरे यात्री के सामान से बरामद किए गए। इस मामले में बरामद संदिग्ध मादक पदार्थ की कुल मात्रा लगभग 47.805 किलोग्राम थी। बरामद एनडीपीएस पदार्थ का बाजार मूल्य लगभग 48 करोड़ रुपये है। दिल्ली के आईजीआई हवाई अड्डे पर हाल के दिनों में हुई सबसे बड़ी जब्ती में से यह एक है। मामले की आगे की जांच जारी है। इसके पहले इंदिरा गांधी हवाई अड्डे पर सीमा शुल्क (कस्टम विभाग) के अधिकारियों ने अवैध रूप से सोना लेकर पहुंचे एनआरआई यात्री को गिरफ्तार किया था। सीमा शुल्क अधिकारियों ने जांच के दौरान पाया था कि यात्री ने अपनी पैंट की भीतरी जेबों में 115 सोने की छड़ें छिपा रखी थीं, जिनका कुल वजन 3565 ग्राम था।

पीएम मोदी से मिले रूबियो...

व्यापार और सुरक्षा संबंधों पर हुई चर्चा

पीएम को व्हाइट हाउस आने का दिया न्योता

नई दिल्ली,23 मई 2026। चार दिवसीय भारत दौरे पर आए अमेरिका के विदेश मंत्री मार्को रूबियो ने नई दिल्ली प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से मुलाकात की। इस दौरान दोनों देशों के नेताओं के बीच व्यापार, सुरक्षा संबंधों समेत कई मुद्दों पर चर्चा हुई। इस दौरान अमेरिकी विदेश मंत्री ने पीएम मोदी को व्हाइट हाउस आने का भी न्योता दिया। इससे पहले रूबियो शनिवार पहले कोलकाता पहुंचे फिर दिल्ली के लिए रवाना हुए थे। अमेरिका के राजदूत सर्जियो गोर ने कहा की प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को व्हाइट हाउस आने का औपचारिक आमंत्रण दिया है। उन्होंने बताया कि यह निमंत्रण राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की ओर से विदेश मंत्री मार्को रूबियो के माध्यम से भेजा गया है। सर्जियो गोर के अनुसार, पीएम मोदी और मार्को रुबियो के बीच हुई बातचीत काफी सकारात्मक और रचनात्मक रही। इस दौरान दोनों देशों के बीच सुरक्षा, व्यापार और महत्वपूर्ण तकनीकों के क्षेत्र में सहयोग को और गहरा करने के तरीकों पर विस्तार से चर्चा की गई। राजधानी दिल्ली में अपने प्रवास के दौरान अमेरिकी विदेश मंत्री कई महत्वपूर्ण कार्यक्रमों में भाग लेंगे। वह अमेरिकी दूतावास सपोर्ट एनेक्स बिल्डिंग के उद्घाटन समारोह को संबोधित करेंगे और अमेरिकी राजदूत सर्जियो गोर द्वारा आयोजित रूजवेल्ट हाउस रिसेप्शन में भी शामिल होंगे।

जयशंकर के साथ होगी द्विपक्षीय वार्ता

मार्को रुबियो आज भारत के विदेश मंत्री एस.जयशंकर के साथ द्विपक्षीय वार्ता करेंगे। इस बैठक में दोनों देशों के बीच ऊर्जा, व्यापार,निवेश,महत्वपूर्ण तकनीक और जन-जन के संबंधों को मजबूत करने पर विशेष चर्चा होने की संभावना है। इसके अलावा पश्चिम एशिया में जारी तनाव और वैश्विक ऊर्जा आपूर्ति जैसे अहम अंतरराष्ट्रीय मुद्दे भी बातचीत का हिस्सा रहेंगे।

देशभर में पेट्रोल-डीजल फिर महंगा...

कांग्रेस ने पीएम मोदी को बताया 'महंगाई मैन'

9 दिनों में पेट्रोल-डीजल के दाम 5 रुपये तक बढ़े

नई दिल्ली,23 मई 2026। देशभर में एक बार फिर पेट्रोल-डीजल की कीमतों में बढ़ोतरी ने आम जनता की चिंता बढ़ा दी है। शनिवार,23 मई से पेट्रोल के दाम में 87 पैसे प्रति लीटर और डीजल में 91 पैसे प्रति लीटर की वृद्धि की गई है। वहीं सीएनजी की कीमतों में भी 1 रुपये प्रति किलो का इजाफा हुआ है। 15 मई से 23 मई के बीच ईंधन कीमतों में यह तीसरी बढ़ोतरी है,जिससे लोगों की जेब पर लगातार बोझ बढ़ता जा रहा है। पेट्रोल-डीजल की बढ़ती कीमतों को लेकर कांग्रेस ने केंद्र सरकार और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर तीखा हमला बोला है। कांग्रेस ने सोशल मीडिया पोस्ट के जरिए पीएम मोदी को 'महंगाई मैन' बताते हुए आरोप लगाया कि बीते 9 दिनों में पेट्रोल-डीजल के दाम करीब 5 रुपये तक बढ़ा दिए गए हैं। कांग्रेस ने कहा कि सरकार को सिर्फ तेल कंपनियों के मुनाफे की चिंता है,जबकि आम जनता महंगाई से परेशान है। पार्टी ने आरोप लगाया कि दुनिया के कई देश अपनी जनता को राहत देने के लिए कदम उठा रहे हैं,लेकिन भारत में लगातार ईंधन के दाम बढ़ाकर लोगों पर अतिरिक्त बोझ डाला जा रहा है। विशेषज्ञों के अनुसार ईरान-अमेरिका-इजरायल के बीच जारी तनाव और पश्चिम एशिया में बने ऊर्जा संकट के कारण वैश्विक कच्चे तेल की कीमतों में उछाल आया है। हालांकि फिलहाल युद्धविराम लागू है,लेकिन होर्मुज स्ट्रेट में अस्थिर स्थिति के चलते अंतरराष्ट्रीय तेल आपूर्ति प्रभावित हो रही है। भारत अपनी जरूरत का बड़ा हिस्सा आयात करता है, इसलिए अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल की कीमत बढ़ने का सीधा असर देश में पेट्रोल-डीजल के दामों पर पड़ रहा है।

कांग्रेस अध्यक्ष खरगे ने पेट्रोलियम की बढ़ती कीमतों को लेकर केंद्र पर बोला हमला, कहा-संकट के बीच जनता को लूटा जा रहा है...

कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने पेट्रोलियम पदार्थों की कीमतों में लगातार हो रही बढ़ोतरी को लेकर केंद्र सरकार पर हमला बोला है। उन्होंने आरोप लगाया कि सरकार अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल की कीमतें कम होने के बावजूद जनता को राहत देने के बजाय लगातार पेट्रोल,डीजल,सीएनजी और एलपीजी के दाम बढ़ाकर आम लोगों पर अतिरिक्त बोझ डाल रही है। मल्लिकार्जुन खरगे ने शनिवार को सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर कहा कि बीते दस दिनों में तीसरी बार पेट्रोल और डीजल के दाम बढ़ाए गए हैं। उन्होंने कहा कि सरकार यह तर्क देकर अपनी जिम्मेदारी से बचने की कोशिश कर रही है कि भारत में ईंधन की कीमतें कई अन्य देशों की तुलना में कम हैं, जबकि सच्चाई यह है कि संकट के समय अन्य देशों ने अपनी जनता को राहत देने के लिए टैक्स में कटौती और राहत पैकेज की घोषणा की। उन्होंने कहा कि पश्चिम एशिया में जारी तनाव और वैश्विक आर्थिक अनिश्चितता के दौरान इटली, ऑस्ट्रेलिया,जर्मनी,ब्रिटेन और आयरलैंड जैसे देशों ने ईंधन पर टैक्स घटाकर या सब्सिडी देकर लोगों को राहत पहुंचाई। इसके विपरीत भारत में लगातार कीमतें बढ़ाई जा रही हैं,जिससे आम जनता की जेब पर सीधा असर पड़ रहा है। कांग्रेस अध्यक्ष ने आरोप लगाया कि महंगाई पहले से ही लोगों के लिए बड़ी समस्या बनी हुई है और अब पेट्रोलियम पदार्थों की कीमतों में लगातार बढ़ोतरी से परिवहन, खाद्य सामग्री और रोजमर्रा की जरूरतों की लागत भी बढ़ेगी। उन्होंने कहा कि इसका सबसे ज्यादा असर मध्यम वर्ग, किसानों, छोटे व्यापारियों और निम्न आय वर्ग पर पड़ेगा। उल्लेखनीय है कि बीते एक महीने में पेट्रोल, डीजल, सीएनजी और एलपीजी की कीमतों में कई बार वृद्धि की गई है।

त्विशा शर्मा मौत मामला...आरोपित पति समर्थ को 7 दिन की पुलिस रिमांड,पासपोर्ट जब्त करने का आदेश

भोपाल,23 मई 2026। अभिनेत्री और मॉडल त्विशा शर्मा की संदिग्ध मौत के मामले में उसके पति पर कानूनी शिकंजा कसता जा रहा है। शनिवार को भोपाल जिला कोर्ट ने मुख्य आरोपित और मृतका के पति समर्थ सिंह की 7 दिनों की पुलिस रिमांड मंजूर कर ली। इसके साथ ही कोर्ट ने त्विशा के परिजनों की गुहार पर कड़ा रुख अपनाते हुए आरोपित समर्थ सिंह का पासपोर्ट तत्काल जब्त करने के आदेश भी जारी कर दिया, ताकि वह देश छोड़कर भाग न सके। इससे पहले शुक्रवार देर रात करीब 2 बजे पुलिस आरोपित समर्थ को जबलपुर से भोपाल लेकर आई थी और सुरक्षा के लिहाज से कटारा हिल्स थाने के बाहर बैरिकेडिंग कर भारी पुलिस बल तैनात किया गया था। कोर्ट में पेशी से पहले शनिवार सुबह जेपी अस्पताल में आरोपित का मेडिकल टेस्ट भी कराया गया। त्विशा के शव का दोबारा पोस्टमॉर्टम रविवार को कराया जाएगा। इस हाई-प्रोफाइल केस की निष्पक्षता के

लिए एम्स दिल्ली के चार वरिष्ठ डॉक्टरों की एक विशेष मेडिकल टीम गठित की गई है। यह टीम तमाम आधुनिक फॉरेंसिक उपकरणों के साथ शनिवार शाम 6 बजे राज्य सरकार के विशेष चार्टर्ड विमान से भोपाल के लिए रवाना हुई और देर रात यहां पहुंच जायेगी। इसके बाद डॉक्टरों की यह विशेष टीम दोबारा पोस्टमॉर्टम करेगी। वहीं, त्विशा की सास रिटायर्ड जज गिरिबाला सिंह और पति समर्थ सिंह के वकील एडवोकेट ज्ञानेंद्र शर्मा ने कोर्ट के फैसले पर प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि पुलिस ने जांच को आगे बढ़ाने के लिए 7 दिनों की रिमांड मांगी थी, जिसे कोर्ट ने स्वीकार कर लिया। हालांकि हमने इसका विरोध किया था,क्योंकि समर्थ से बरामद करने के लिए कुछ नहीं है। फिर भी हमें कोर्ट के आदेश पर कोई आपत्ति नहीं है। रिमांड की अवधि समाप्त होने के बाद हम जमानत के लिए आवेदन करेंगे। इधर, त्विशा के परिजनों ने सास गिरिबाला सिंह को मिल चुकी अग्रिम जमानत को चुनौती दी है। परिजनों की ओर से भोपाल कोर्ट में गिरिबाला की जमानत निरस्त करने के लिए एक आवेदन दायर किया गया है,जिस पर अदालत सोमवार को सुनवाई करेगी। शनिवार दोपहर भोपाल पुलिस कमिश्नर संजय कुमार ने भी प्रेस कॉन्फ्रेंस कर पुलिस का पक्ष रखा। उन्होंने बताया कि पुलिस इस पूरे मामले की अत्यंत गहराई और निष्पक्षता से जांच कर रही है। रिमांड अवधि के दौरान पुलिस समर्थ सिंह से घटना वाली रात के घटनाक्रम, आपसी पारिवारिक विवाद, मोबाइल चैट, कॉल डिटेल्स और उसकी फरारी के दौरान की कड़ियों को जोड़ेगी।

कोलकाता में साल्ट लेक स्टेडियम के बाहर से हटाई गई फुटबॉल मूर्ति,ममता ने की थी डिजाइन...

कोलकाता,23 मई 2026। पश्चिम बंगाल में भाजपा की सरकार बनते ही तृणमूल कांग्रेस के कार्यकाल में लिए गए पुराने फैसलों को पलटा जा रहा है। अब राज्य सरकार ने कोलकाता के साल्ट लेक स्टेडियम के बाहर लगी फुटबॉल मूर्ति को तोड़ दिया है। पश्चिम बंगाल के खेल मंत्री निशीथ प्रमाणिक ने इस मूर्ति के डिजाइन की तीखी आलोचना करते हुए इसे भद्दा, बेतुका और निरर्थक बताया था। इस मूर्ति को पूर्व मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने डिजाइन किया था। प्रमाणिक ने 17 मई को स्टेडियम में एक फुटबॉल मैच के बाद कहा था कि इस मूर्ति में सौंदर्य की कमी है। उन्होंने पत्रकारों से कहा, ऐसी भद्दी दिखने वाली मूर्ति, जिसके धड़ से 2 पैर कटे हुए हों।

कर्नाटक में भीषण सड़क हादसा...ट्रक की टक्कर से एक ही परिवार के 5 लोगों की मौत

कलबुर्गी,23 मई 2026। कर्नाटक के कलबुर्गी जिले में भीषण हादसा हो गया। एक क्रूजर वाहन और ट्रक की आमने-सामने की टक्कर में एक ही परिवार के 5 लोगों की मौत हो गई। यह घटना कलबुर्गी जिले के चित्तपुर तालुका के लाडलापुर के पास हुई। जानकारी के मुताबिक, शुक्रवार देर रात चित्तपुर तालुक के इंगलागी गांव के एक ही परिवार के सदस्य क्रूजर में यादगीर से लौट रहे थे। इसी दौरान लाडलापुर के पास राष्ट्रीय राजमार्ग पर एक ट्रक से क्रूजर की टक्कर हो गई। टक्कर इतनी भीषण थी कि क्रूजर में सवार तोलुसाब केशवर (27), हुसैन शाह (48), मैबूब अली (45), रसूल बी (42) और फातिमा अली (38) की मौके पर ही मौत

हो गई। सूचना मिलते ही स्थानीय लोगों की मौके पर भीड़ उमड़ पड़ी। मौके पर पहुंची पुलिस ने शवों को पोस्टमार्टम के लिए भेजकर जांच शुरू कर दी है। वरिष्ठ पुलिस अधिकारियों ने भी घटनास्थल का निरीक्षण किया।

जानकारी के अनुसार, इंगलागी गांव के एक बीमार व्यक्ति को इलाज के लिए यादगीर अस्पताल में भर्ती कराया गया था। अस्पताल में भर्ती कराने के बाद परिवार के 5 सदस्य एक क्रूजर वाहन से अपने गांव लौट रहे थे। रात में जब वे लाडलापुरा गांव पहुंचे तो सामने से आ रहे एक ट्रक से उनकी टक्कर हो गई। दुर्घटना की आवाज सुनकर स्थानीय लोग तुरंत मौके पर पहुंचे और पुलिस को तुरंत सूचना दी गई।

अग्नि-1 बैलिस्टिक मिसाइल का सफल परीक्षण,परमाणु बम ले जाने में सक्षम

नई दिल्ली,23 मई 2026। भारत ने स्वदेशी अग्नि-1 बैलिस्टिक मिसाइल का सफल परीक्षण किया है। अग्नि-1 शॉर्ट रेंज बैलिस्टिक मिसाइल का सफल परीक्षण ओडिशा के चांदीपुर स्थित इंटीग्रेटेड टेस्ट रेंज से किया गया। परमाणु व पारंपरिक दोनों वॉरहेड ले जाने में सक्षम यह मिसाइल 700-1200 किमी तक हमला कर सकता है। इसकी जद में पूरा पाकिस्तान आता है। यह परीक्षण पाकिस्तान को करारा जवाब है, क्योंकि पिछले कुछ दिनों में फतह मिसाइलों का

टेस्ट किया है। भारतीय रक्षा अनुसंधान और विकास संगठन ने ओडिशा के तट पर स्थित डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम द्वीप से 'अग्नि-1' बैलिस्टिक मिसाइल का सफलतापूर्वक परीक्षण किया। यह परीक्षण शाम ठीक 6:30 बजे एकीकृत परीक्षण रेंज से किया गया। मंत्रालय ने एक बयान में कहा, 'इस सफल परीक्षण के साथ, भारत ने एक बार फिर एक ही मिसाइल सिस्टम का उपयोग करके कई रणनीतिक लक्ष्यों को निशाना बनाने की अपनी क्षमता का प्रदर्शन किया है। इस मिसाइल को DRDO की प्रयोगशालाओं ने देश भर के उद्योगों के सहयोग से विकसित किया है। इस परीक्षण को DRDO के वरिष्ठ वैज्ञानिकों और भारतीय सेना के जवानों ने देखा। परीक्षण के दौरान मिसाइल ने अपना तय रास्ता पूरा किया और लक्ष्य को सटीक रूप से भेदा।

चीन की कोयला खदान में ब्लास्ट...90 लोगों की मौत,जिनपिंग बोले-गुनहगारों को नहीं छोड़ेंगे

बीजिंग,23 मई 2026। चीन के शांक्सी प्रांत में एक कोयला खदान में हुए भीषण विस्फोट में कम से कम 90 लोगों की मौत हो गई। यह हादसा चीन में पिछले एक दशक का सबसे बड़ा कोयला खदान हादसा माना जा रहा है। सरकारी समाचार एजेंसी शिन्हुआ के मुताबिक विस्फोट शुक्रवार को शांक्सी प्रांत के किनयुआन काउंटी में हुआ। यह इलाका बीजिंग से करीब 520 किलोमीटर दक्षिण-पश्चिम में स्थित है। हादसे से पहले खदान में कार्बन मोनोऑक्साइड गैस का अलर्ट जारी किया गया था। इसके कुछ समय बाद जोरदार विस्फोट हुआ। जिस समय धमाका हुआ, उस वक्त खदान के अंदर 247 मजदूर काम कर रहे थे। अभी यह साफ नहीं है कि कितने लोग अब भी अंदर फंसे हुए हैं। राहत और बचाव अभियान जारी है। हैरानी की बात यह है कि हादसे के तुरंत बाद शिन्हुआ ने शुरुआती रिपोर्ट में सिर्फ आठ मौत की जानकारी दी थी और कहा था

कि 200 से ज्यादा मजदूरों को सुरक्षित बाहर निकाल लिया गया है। बाद में अचानक मृतकों की संख्या बढ़कर 82 बताई गई। सरकारी मीडिया ने यह साफ नहीं किया कि आंकड़ा इतनी तेजी से कैसे बढ़ा। चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग ने हादसे के बाद बचाव टीमों को लापता लोगों को खोजने के लिए हर संभव कोशिश करने का निर्देश दिया। उन्होंने कहा कि हादसे के जिम्मेदार लोगों को बख्शा नहीं जाएगा।

राघव चड्ढा राज्यसभा की याचिका समिति के अध्यक्ष नियुक्त

नई दिल्ली,23 मई 2026। हाल में आम आदमी पार्टी छोड़कर भारतीय जनता पार्टी में शामिल हुए राज्यसभा सदस्य राघव चड्ढा को इस सदन की याचिका समिति का नया अध्यक्ष नियुक्त किया गया है। राज्यसभा के सभापति सी. पी. राधाकृष्णन ने याचिका समिति का पुनर्गठन करने के बाद सदन के 10 सदस्यों को इस समिति के लिए नामित किया। राज्यसभा की एक अधिसूचना में कहा गया, 'राघव चड्ढा को समिति का अध्यक्ष नियुक्त किया गया है।'' अधिसूचना में कहा गया कि राज्यसभा के सभापति ने समिति का पुनर्गठन किया है जो 20 मई से प्रभाव में है। समिति में चड्ढा के अलावा हर्ष महाजन, गुलाम अली, शंभू शरण पटेल, मयंककुमार नायक, मस्तान राव यादव बीडा, जेवी माथेर हिशाम, सुभाशीष खुटिया, रवंगवरा नारजारी और संदोष कुमार पी। अन्य सदस्य हैं। राज्यसभा सचिवालय ने एक अन्य अधिसूचना में कहा, 'राज्यसभा के सभापति ने 20 मई 2026 को राज्यसभा सदस्य डॉ. मेनका गुरुस्वामी को कॉरपोरेट कानून (संशोधन) विधेयक 2026 संबंधी संयुक्त समिति का सदस्य नामित किया है।''

आजम खान की मुश्किलें बढ़ीं,दो पैन कार्ड मामले में 7 साल की सजा बढ़कर 10 साल हुई

रामपुर,23 मई 2026। समाजवादी पार्टी के वरिष्ठ नेता और पूर्व मंत्री आजम खान की मुश्किलें कम होने का नाम नहीं ले रही हैं। शनिवार को दो पैन कार्ड रखने के मामले में मजिस्ट्रेट कोर्ट द्वारा पहले तय की गई 7 साल की सजा को एमपी-एमएलए सेशन कोर्ट ने बढ़ाकर 10 साल कर दिया है। एमपी-एमएलए सेशन कोर्ट ने सिर्फ आजम खान और उनके बेटे की सजा ही नहीं बढ़ाई है बल्कि जुर्माने की राशि भी बढ़ा दी है। कोर्ट ने आजम खान के बेटे अब्दुल्ला आजम की सजा 7 साल ही बरकरार रखी लेकिन जुर्माना बढ़ा दिया है। पहले मजिस्ट्रेट कोर्ट ने दोनों को 7-7 साल की सजा सुनाई थी और 50 हजार रुपये का जुर्माना लगाया था। एमपी-एमएलए कोर्ट के इस फैसले के बाद दोनों नेताओं की मुश्किलें और बढ़ गई हैं। दूसरी तरफ इस मामले को लेकर भाजपा विधायक आकाश कुमार सक्सेना ने कोर्ट के फैसले का स्वागत किया। न्यूज एजेंसी से बातचीत करते हुए विधायक आकाश सक्सेना ने कहा कि दो पैन कार्ड के मामले में यह ऐतिहासिक फैसला है। यह अपने आप में अनोखा फैसला है क्योंकि इस मामले में सजा बढ़ाने की अपील की गई थी और सजा बढ़ाई भी गई। अब्दुल्ला आजम की सजा बरकरार रखी गई है और उन पर जुर्माना भी लगाया गया है।

संपादकीय

फिर से न उभरने पाएं माओवादी

माओवाद का जहर निकालने के बाद मोदी सरकार अब प्रभावित इलाकों की सुरक्षा और वहां विकास सुनिश्चित करने में जुट गई है। बीते दिनों बस्तर में केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने यहां विकास न पहुंचने का कारण माओवाद को बताते हुए कहा कि गैर-भाजपा सरकारों ने तो माओवाद मुक्त अभियान में हमारा सहयोग किया, लेकिन कांग्रेस की सरकार ने नहीं किया।

इस पर विचार करना आवश्यक है कि 1960 के दशक में बंगाल के नक्सलबाड़ी से उठा ये बवंडर कैसे 14 राज्यों के लगभग 150 जिलों तक फैल गया? कैसे माओवादी तिरुपति से लेकर पशुपतिनाथ तक लाल गलियारा बनाने में जुटे? आखिर वे कौन सरकारें थीं, जिन्होंने हजारों निर्दोष लोगों की हत्याएं करने वाले माओवादियों को फलने-फूलने दिया और उन्हें बिगड़ैल बच्चा कहकर आगे बढ़ाया?

यह अकारण नहीं है कि पीएम मोदी कांग्रेस को माओवाद समर्थक बताते हैं। कांग्रेस का इतिहास माओवाद के समर्थन का भी रहा है। वह माओवाद को एक सामाजिक-आर्थिक समस्या बताती रही। इसी के चलते 1970-80 के दशक में माओवादी फैलते चले गए। 1990 के दशक की शुरुआत में माओवादियों ने जब छत्तीसगढ़ में बस्तर के साथ ओडिशा,आंध्र और महाराष्ट्र के कुछ हिस्सों को मिलाकर दण्डकारण्य आदिवासी राज्य बनाने के लिए हिंसक गतिविधियां तेज कीं,तब भी कांग्रेस की सरकारें निष्क्रिय बनी रहीं।

इस दौरान सैकड़ों जवान बलिदान हुए और निर्दोष नागरिक मारे गए। आंध्र की वाइएसआर रेड्डी की कांग्रेस सरकार ने तो 2004 में पीपुल्स वार ग्रुप से समझौता वार्ता तक कर ली थी। हालांकि टीडीपी का रुख खिलाफ रहा। 2003 में माओवादियों ने तत्कालीन मुख्यमंत्री चंद्रबाबू नायडू पर हमला भी किया था। एक समय माओवादियों ने दक्षिण में अपना जंक्शन बना लिया था, जिसे केकेटी जोनल कमेटी कहते थे। केकेटी यानी केरल,कर्नाटक और तमिलनाडु। दक्षिण में माओवादियों का कितना असर था,इसका अंदाजा इससे लगाया जा सकता है कि उन्होंने यहीं आईईडी ब्लास्ट की तकनीक लिट्टे से सीखी थी। माओवादियों ने कांग्रेस को भी घाव दिए। 2013 में छत्तीसगढ़ के सुकमा जिले की झीरम घाटी में उन्होंने घात लगाकर हमला किया,जिसमें राज्य कांग्रेस का लगभग पूरा नेतृत्व खत्म हो गया। इसके बाद कांग्रेस का रुख थोड़ा बदला,पर 2018 से 2023 तक छत्तीसगढ़ की बघेल सरकार ने माओवादियों के खिलाफ वैसा अभियान नहीं छेड़ा,जैसा आवश्यक था।

जब बीती 31 मार्च माओवाद के खात्मे की डेडलाइन थी,तब तेलंगाना की कांग्रेस सरकार ने कहा कि राज्य में किसी माओवादी का एनकाउंटर नहीं होगा। यही वजह रही कि देश के दूसरे हिस्सों में जब माओवादियों का एनकाउंटर हो रहा था, तब तेलंगाना से एक भी बड़े एनकाउंटर की खबर नहीं आई। छत्तीसगढ़ में आपरेशन के दौरान माओवादी भागकर तेलंगाना के जंगलों में शरण ले रहे थे, इसलिए वहां से सिर्फ माओवादियों के सरेंडर की खबरें आईं।

माओवादियों के खिलाफ देश के अलग-अलग हिस्सों में अभियान चल रहे थे, लेकिन सबसे संघर्ष क्षेत्र बस्तर यानी दण्डकारण्य और अबूझमाड़ का जंगल था। इसी दण्डकारण्य से तेलंगाना,आंध्र,ओडिशा की सीमा लगती है। यहां माओवादियों का जोर था। अबूझमाड़ से गढ़चिरौली-महाराष्ट्र की सीमा लगती है, जिसे पिछले सप्ताह आपरेशन अंतिम प्रहार के बाद आधिकारिक रूप से माओवाद से मुक्त घोषित किया गया।

अनेक ऐसे समूह भी थे,जो उनसे सहानुभूति रखते थे। 2003 में छत्तीसगढ़ में जब रमन सिंह की भाजपा सरकार आई तो पुलिस और अर्धसैनिक बलों को गुरिल्ला युद्ध का प्रशिक्षण देने के लिए नगालैंड आर्म्ड फोर्स की बटालियन बस्तर बुलाई गई। उसने बीजापुर के सलवा जुडूम के साथ मिलकर माओवादियों पर जबरदस्त दबाव बनाया। सलवा जुडूम ग्रामीणों का समूह था, जो माओवादियों के खिलाफ उठ खड़ा हुआ था। 2005 से 2007 के बीच नगा बटालियन ने माओवादियों की जड़ें हिला दी थीं।

माओवाद समर्थकों से यह देखा नहीं गया। वामपंथियों ने छत्तीसगढ़ में नगा बटालियन भेजे जाने पर खूब हाय-तौबा मचाई। आखिर 2007 में उसे वापस बुला लिया गया। इससे माओवादियों का हौसला बढ़ा। उन्होंने 2007 में बीजापुर के रानी बोडली गांव में पुलिस कैंप पर हमला कर उसमें आग लगा दी, जिसमें 55 जवान जिंदा जल गए। 2010 में सुकमा के तारमेटला में माओवादियों ने हमला किया,जिसमें सीआरपीएफ के 76 जवान बलिदान हो गए।

कॉकरोच से क्रांति तक

डिजिटल युग में लोकतांत्रिक असहमति का नया स्वर...

भारतीय लोकतंत्र में असहमति व्यक्त करने के तरीके समय के साथ बदलते रहे हैं...कभी स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान सत्याग्रह और धरने राजनीतिक प्रतिरोध के प्रमुख माध्यम थे,तो कभी साहित्य,रंगमंच और पत्रकारिता ने सत्ता से सवाल पूछने का कार्य किया...इक्कीसवीं सदी के तीसरे दशक में प्रवेश करते हुए यह परिदृश्य एक बार फिर बदलता दिखाई दे रहा है...आज सोशल मीडिया,मीम्स,व्यंग्य और डिजिटल अभियानों ने राजनीतिक अभिव्यक्ति के नए मंच तैयार कर दिए हैं...युवा पीढ़ी अब केवल सभाओं,रैलियों और ज्ञापनों तक सीमित नहीं है,वह अपने विचारों को इंटरनेट की दुनिया में नए प्रतीकों और नई भाषा के माध्यम से सामने ला रही है...मई 2026 में अचानक चर्चा में आई कॉकरोच जनता पार्टी इसी बदलते राजनीतिक और सामाजिक यथार्थ का एक महत्वपूर्ण उदाहरण है...

डॉ. प्रियंका सौरभ
हिसार,हरियाणा

पहली दृष्टि में यह एक हास्यास्पद नाम प्रतीत होता है। किसी राजनीतिक दल या आंदोलन का नाम कॉकरोच रखना सामान्य नहीं माना जा सकता। लेकिन राजनीति में प्रतीकों का महत्व हमेशा से रहा है। कई बार जो शब्द अपमान के लिए प्रयुक्त किए जाते हैं,वही प्रतिरोध और पहचान के प्रतीक बन जाते हैं। इतिहास में ऐसे अनेक उदाहरण मिलते हैं जब समाज के किसी वर्ग ने अपने ऊपर लगाए गए नकारात्मक विशेषणों को ही अपनी शक्ति में बदल दिया। कॉकरोच जनता पार्टी का उदय भी इसी प्रवृत्ति को दर्शाता है। यह केवल एक नाम नहीं,बल्कि उस मानसिकता के विरुद्ध व्यंग्यात्मक प्रतिक्रिया है जिसे युवा अपने प्रति उपेक्षापूर्ण मानते हैं।

इस पूरे घटनाक्रम की शुरुआत एक न्यायिक टिप्पणी को लेकर उत्पन्न विवाद से हुई। सोशल मीडिया पर यह धारणा तेजी से फैली कि बेरोजगार युवाओं की तुलना कॉकरोच से की गई है। यद्यपि बाद में इस टिप्पणी के संदर्भ को लेकर स्पष्टीकरण भी सामने आए, लेकिन तब तक स्थिति बदल चुकी थी। युवाओं के एक बड़े वर्ग ने इस शब्द को अपने अपमान के प्रतीक के रूप में ग्रहण किया और फिर उसी को प्रतिरोध के प्रतीक में बदल दिया। यह वही प्रक्रिया है जिसे आधुनिक राजनीतिक सिद्धांत में रीक्लेमिंग द नैरेटिव कहा जाता है–अर्थात जिस शब्द या पहचान का इस्तेमाल आपको कमजोर करने के लिए किया गया हो, उसे अपनी ताकत में बदल देना।

सोशल मीडिया के युग में किसी विचार को जनांदोलन का रूप लेने में अब महीनों या वर्षों की आवश्यकता नहीं होती। कुछ घंटे और कुछ वायरल पोस्ट ही पर्याप्त होते हैं। कॉकरोच जनता पार्टी का उदय इसी डिजिटल युग की देन है। पूर्व राजनीतिक सोशल मीडिया कार्यकर्ता अभिजीत दीपके द्वारा इसकी घोषणा किए जाने के बाद देखते ही देखते लाखों लोग इससे जुड़ने लगे। इंस्टाग्राम,एक्स और अन्य प्लेटफॉर्मों पर इसके समर्थन में बड़ी संख्या में पोस्ट, मीम्स और वीडियो साझा किए जाने लगे। यह स्पष्ट संकेत था कि यह केवल एक मजाक नहीं है,बल्कि युवाओं के भीतर मौजूद किसी गहरी बेचैनी और असंतोष की अभिव्यक्ति है। भारत आज दुनिया की सबसे युवा आबादी वाले देशों में से एक है। यह जनसांख्यिकीय स्थिति देश के लिए अवसर भी है और चुनौती भी। अवसर इसलिए क्योंकि युवा ऊर्जा विकास की गति को तेज कर सकती है,और चुनौती इसलिए क्योंकि यदि इस ऊर्जा को सही दिशा न मिले तो असंतोष और निराशा बढ़ सकती है। पिछले कुछ वर्षों में रोजगार का प्रश्न भारतीय युवाओं के सामने सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक बनकर उभरा है। लाखों छात्र वर्षों तक प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करते हैं, लेकिन भर्तियों में देरी, पेपर लीक, सीमित पदों और प्रशासनिक जटिलताओं के कारण उनका भविष्य अनिश्चित बना रहता है। निजी क्षेत्र में भी रोजगार की गुणवत्ता और स्थिरता को लेकर अनेक प्रश्न मौजूद हैं। ऐसे में युवाओं के भीतर व्यवस्था के प्रति असंतोष बढ़ना स्वाभाविक है।

कॉकरोच जनता पार्टी की लोकप्रियता को इसी संदर्भ में समझना होगा। यह आंदोलन केवल एक टिप्पणी की प्रतिक्रिया नहीं है। यह उस व्यापक मनोदशा का परिणाम है जो लंबे समय से बन रही थी। बेरोजगारी, महंगाई, बढ़ती प्रतिस्पर्धा, मानसिक तनाव, सामाजिक अपेक्षाएँ और भविष्य की अनिश्चितता–इन सभी कारकों ने युवाओं के भीतर एक ऐसी बेचैनी पैदा की है जिसे पारंपरिक राजनीति पर्याप्त रूप से संबोधित नहीं कर सकी। इसलिए जब उन्हें एक ऐसा मंच मिला जहाँ वे व्यंग्य और हास्य के माध्यम से अपनी बात कह सकते थे, तो उन्होंने उसे हाथोंहाथ स्वीकार कर लिया।

इस आंदोलन की सबसे दिलचस्प विशेषता इसका व्यंग्यात्मक स्वर है। इसकी टैगलाइन Voice of the Lazy and Unemployed" अर्थात आलसी और बेरोजगारों की आवाज़ सुनने में

हास्यास्पद लग सकती है,लेकिन इसके भीतर गहरा राजनीतिक संदेश छिपा है। यह उस सोच पर सीधा प्रहार करती है जिसमें बेरोजगारी को अक्सर व्यक्ति की असफलता या आलस्य का परिणाम मान लिया जाता है। वास्तविकता यह है कि रोजगार का प्रश्न केवल व्यक्तिगत प्रयास का नहीं,बल्कि आर्थिक नीतियों, शिक्षा व्यवस्था,औद्योगिक विकास और प्रशासनिक दक्षता से भी जुड़ा हुआ है। जब लाखों योग्य युवा नौकरी पाने के लिए संघर्ष कर रहे हों,तब पूरी समस्या का दोष केवल उन पर डाल देना उचित नहीं कहा जा सकता।

कॉकरोच जनता पार्टी द्वारा जारी घोषणापत्र भी इस आंदोलन की गंभीरता को रेखांकित करता है। पहली मांग रोजगार और बेरोजगारी से संबंधित है, जो दर्शाती है कि यह मुद्दा युवाओं की प्राथमिक चिंता है। दूसरी मांग आलस्य के अधिकार जैसी व्यंग्यात्मक अभिव्यक्ति के माध्यम से आधुनिक जीवन की प्रतिस्पर्धात्मक संस्कृति पर सवाल उठाती है। आज का युवा लगातार प्रदर्शन,सफलता और उपलब्धि के दबाव में जी रहा है। सोशल मीडिया ने इस दबाव को और बढ़ा दिया है, जहाँ हर व्यक्ति स्वयं की तुलना दूसरों से करता रहता है। ऐसे माहौल में यह मांग वास्तव में मानसिक स्वास्थ्य,जीवन की गुणवत्ता और मानवीय गरिमा के प्रश्न को सामने लाती है।

घोषणापत्र की तीसरी मांग राजनीति में महिलाओं के अधिक प्रतिनिधित्व की बात करती है। यह महत्वपूर्ण है कि एक व्यंग्यात्मक आंदोलन भी लैंगिक समानता जैसे गंभीर विषय को अपने एजेंडे में स्थान देता है। चौथी मांग मीडिया की जवाबदेही से जुड़ी है। आज मीडिया की भूमिका को लेकर समाज में व्यापक बहस चल रही है। एक बड़ा वर्ग मानता है कि मीडिया का एक हिस्सा जनसरोकारों की अपेक्षा राजनीतिक और कॉर्पोरेट हितों को अधिक महत्व देता है। युवाओं के बीच यह भावना और अधिक प्रबल है क्योंकि वे अपनी समस्याओं को मुख्यधारा के विमर्श में पर्याप्त स्थान नहीं पाते। पाँचवीं मांग दलबदल की राजनीति पर रोक लगाने से संबंधित है, जो भारतीय लोकतंत्र की एक पुरानी समस्या रही है। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि व्यंग्य के आवरण में प्रस्तुत यह घोषणापत्र वास्तव में गंभीर राजनीतिक प्रश्नों को सामने लाता है।

इस आंदोलन का एक महत्वपूर्ण पहलू यह भी है कि यह राजनीति की भाषा को बदलता है। पारंपरिक राजनीति अक्सर गंभीर भाषणों,जटिल घोषणा-पत्रों और औपचारिक संवाद पर आधारित होती है। इसके विपरीत डिजिटल राजनीति मीम्स, छोटे वीडियो, व्यंग्यात्मक पोस्ट और वायरल अभियानों पर आधारित है। आज का युवा लंबी राजनीतिक बहसों की अपेक्षा संक्षिप्त,तीखी और प्रभाव शाली अभिव्यक्ति को अधिक पसंद करता है। यही कारण है कि कॉकरोच जनता पार्टी जैसे अभियान इतनी तेजी से लोकप्रिय हो जाते हैं। वे उस भाषा में बात करते हैं जिसे नई पीढ़ी समझती और अपनाती है।

हालाँकि इस लोकप्रियता को लेकर कुछ सावधानियाँ भी आवश्यक हैं। सोशल मीडिया पर बड़ी संख्या में फॉलोअर्स होना हमेशा वास्तविक राजनीतिक समर्थन का प्रमाण नहीं होता। इंटरनेट की दुनिया में कई अभियान तेजी से उभरते हैं और उतनी ही तेजी से गायब भी हो जाते हैं। इसलिए यह कहना जल्दबाजी होगी कि कॉकरोच जनता पार्टी भविष्य में एक बड़ी राजनीतिक शक्ति बन जाएगी। लेकिन यह भी सच है कि किसी आंदोलन का महत्व केवल उसके चुनावी भविष्य से नहीं आँका जा सकता। कई बार आंदोलन समाज के भीतर छिपी भावनाओं और समस्याओं को उजागर करने का कार्य करते हैं। इस दृष्टि से देखें तो कॉकरोच जनता पार्टी पहले ही अपनी भूमिका निभा चुकी है। यह आंदोलन पारंपरिक राजनीतिक दलों के लिए भी एक संदेश है। यह बताता है कि युवा अब केवल चुनावी वादों से संतुष्ट नहीं हैं। वे रोजगार,शिक्षा, पारदर्शिता और जवाबदेही जैसे मुद्दों पर ठोस परिणाम चाहते हैं। यदि मुख्यधारा की राजनीति इन अपेक्षाओं को पूरा करने में असफल रहती है, तो युवा नए माध्यमों और नए प्रतीकों के जरिए अपनी आवाज़ उठाते रहेंगे। डिजिटल युग में सूचना और संचार के साधनों ने नागरिकों को पहले से कहीं अधिक शक्तिशाली बना दिया है। अब कोई भी विचार, चाहे वह कितना ही छोटा क्यों न हो, लाखों लोगों तक पहुँच सकता है।

व्यंग्य की शक्ति को भी कम करके नहीं आँकना चाहिए। लोकतंत्र में व्यंग्य केवल मनोरंजन का साधन नहीं होता; वह सत्ता और समाज दोनों के लिए आईना होता है। व्यंग्य उन प्रश्नों को उठाने का साहस देता है जिन्हें सीधे पूछना कभी-कभी कठिन होता है। भारत की साहित्यिक और सांस्कृतिक परंपरा में व्यंग्य का समृद्ध इतिहास रहा है।

पाठक कम,लेखक अधिक

डॉ. सत्यवान सौरभ
बड़वा भिवानी, हरियाणा

आज का समय अभिव्यक्ति का समय है। सोशल मीडिया,ब्लॉग,डिजिटल मंच और स्वयं-प्रकाशन के साधनों ने हर व्यक्ति को अपनी बात कहने का अवसर दिया है। यह लोकतांत्रिक दृष्टि से सकारात्मक परिवर्तन है,क्योंकि अब विचार केवल चुनिंदा लोगों तक सीमित नहीं रहे। किंतु इसी परिवर्तन के बीच एक गंभीर प्रश्न भी उभरकर सामने आया है–क्या हम लिखने की अपेक्षा पढ़ने से दूर होते जा रहे हैं? प्रसिद्ध लेखक रस्किन बॉन्ड का यह कथन कि भारत पाठकों की अपेक्षा लेखकों की संख्या अधिक होने के संकट में है केवल एक व्यंग्यात्मक टिप्पणी नहीं, बल्कि हमारे साहित्यिक और सामाजिक परिवेश का सटीक विश्लेषण है।

वास्तव में आज साहित्य के क्षेत्र में रचनाकारों की संख्या तेजी से बढ़ रही है। हर दिन हजारों कविताएँ,लेख, कहानियाँ और विचार सोशल मीडिया पर साझा किए जाते हैं। अनेक लोग स्वयं को कवि,लेखक या विचारक के रूप में स्थापित करने की कोशिश कर रहे हैं। लेकिन दूसरी ओर गंभीर पाठकों की संख्या लगातार घटती दिखाई देती है। लोग अपनी रचना पर वाह-वाह तो चाहते हैं,पर दूसरों की रचनाओं को पढ़ने,समझने और उस पर विचार करने का धैर्य कम होता जा रहा है। यह स्थिति साहित्य के लिए चिंताजनक है,क्योंकि किसी भी स्वस्थ साहित्यिक परंपरा का आधार केवल लेखक नहीं,बल्कि सजग पाठक भी होते हैं।

पठन संस्कृति किसी भी समाज की बौद्धिक परिपक्वता का संकेत होती है। पढ़ना केवल शब्दों को देखना नहीं, बल्कि विचारों के संसार में प्रवेश करना है। एक अच्छा पाठक अनेक दृष्टिकोणों को समझता है,संवेदनशील बनता है और समाज के प्रति अधिक जागरूक होता है। लेकिन आज मोबाइल स्क्रीन और त्वरित मनोरंजन ने गहन अध्ययन की आदत को कमजोर कर दिया है। लोग छोटी-छोटी पोस्ट,तात्कालिक प्रतिक्रियाएँ और सतही सामग्री पढ़ने तक सीमित हो गए हैं। पुस्तकों के साथ बिताया जाने वाला समय लगातार कम हो रहा है।

डिजिटल युग ने जहाँ अभिव्यक्ति को सरल बनाया,वहीं साहित्य की गंभीरता को भी प्रभावित किया है। पहले लेखक बनने के लिए लंबे अध्ययन,निरंतर अभ्यास और साहित्यिक अनुशासन की आवश्यकता होती थी। लेखक वर्षों तक पढ़ता था, जीवन को समझता था और फिर अपनी अनुभूतियों को शब्द देता था। आज स्थिति कुछ अलग है। सोशल मीडिया पर कुछ पंक्तियाँ लिखकर तुरंत प्रतिक्रिया प्राप्त हो जाती है। लाइक और शेयर की संख्या को ही कई लोग साहित्यिक गुणवत्ता का प्रमाण मान लेते हैं। परिणामस्वरूप लेखन में गहराई की अपेक्षा तात्कालिक लोकप्रियता अधिक महत्वपूर्ण हो गई है। यह भी सच है कि आज के दौर में पढ़ने की बजाय दिखने की प्रवृत्ति बढ़ी है। लोग पुस्तक पढ़ने से अधिक अपनी पुस्तक प्रकाशित कराने में रुचि लेने लगे हैं। साहित्यिक मंचों पर भी कभी-कभी वास्तविक रचना की अपेक्षा प्रचार और समूहबंदी अधिक दिखाई देती है। ऐसे वातावरण में गंभीर पाठक स्वयं को उपेक्षित महसूस करता है। साहित्य केवल तालियों या प्रशंसाओं का माध्यम नहीं,बल्कि समाज के विचार और संवेदनाओं का दर्पण होता है। यदि पाठक ही कम हो जाएँ, तो साहित्य का उद्देश्य अधूरा रह जाता है। भारतीय समाज में पठन संस्कृति के कमजोर होने के कई कारण हैं। शिक्षा प्रणाली भी उनमें से एक है। हमारे विद्यालयों और महाविद्यालयों में पढ़ाई का उद्देश्य अधिकतर परीक्षा तक सीमित हो गया है। विद्यार्थियों को अंक प्राप्त करने की दौड़ में इस प्रकार उलझा दिया जाता है कि वे साहित्य को आनंद या चिंतन के रूप में नहीं, बल्कि बोझ के रूप में देखने लगते हैं। पुस्तकालयों की स्थिति भी संतोषजनक नहीं है। गाँवों और छोटे कस्बों में अच्छी पुस्तकों तक पहुँच आज भी सीमित है। जब समाज में पढ़ने का वातावरण ही कमजोर होगा, तब स्वाभाविक रूप से पाठकों की संख्या घटेगी। परिवारों की भूमिका भी इस संदर्भ में महत्वपूर्ण है। पहले घरों में अखबार,पत्रिकाएँ और पुस्तकें पढ़ने की परंपरा होती थी। बच्चे अपने माता-पिता और बुजुर्गों को पढ़ते देखकर प्रेरित होते थे। आज अधिकांश परिवारों में मोबाइल और टेलीविजन ने पुस्तकों की जगह ले ली है। बच्चों को तकनीक तो मिल रही है,लेकिन पुस्तकों के प्रति लगाव कम होता जा रहा है। परिणामस्वरूप नई पीढ़ी में धैर्यपूर्वक पढ़ने की आदत विकसित नहीं हो पा रही।

हालाँकि यह कहना भी उचित नहीं होगा कि आज का सारा लेखन निरर्थक है। डिजिटल मंचों ने अनेक नए और प्रतिभाशाली रचनाकारों को अवसर दिए हैं। ऐसे लोग भी सामने आए हैं जिन्हें पारंपरिक प्रकाशन संस्थानों में अवसर नहीं मिल पाता था। समस्या लेखकों की संख्या बढ़ने में नहीं, बल्कि पाठकों की संख्या घटने में है। यदि समाज में पढ़ने की संस्कृति मजबूत हो,तो अधिक लेखक होना साहित्य के लिए शुभ संकेत माना जाएगा। लेकिन जब हर व्यक्ति केवल स्वयं को पढ़वाना चाहता हो और दूसरों को पढ़ने की इच्छा कम हो जाए, तब साहित्यिक संतुलन बिगड़ने लगता है। साहित्य केवल लिखने से जीवित नहीं रहता। वह पाठकों के मन में जीवित रहता है। प्रेमचंद,महादेवी वर्मा, निराला,हरिवंश राय बच्चन या रस्किन बॉन्ड आज इसलिए प्रासंगिक हैं क्योंकि पीढ़ियाँ उन्हें पढ़ती रही हैं। यदि पाठक न हों,तो श्रेष्ठतम साहित्य भी अलमारियों में बंद होकर रह जाएगा। इसलिए आवश्यक है कि समाज में पठन संस्कृति को पुनर्जीवित किया जाए।

विद्यालयों में पुस्तक पठन को प्रोत्साहन मिलना चाहिए। केवल पाठ्यक्रम तक सीमित रहने के बजाय विद्यार्थियों को कहानी, कविता, जीवनी और विचार साहित्य पढ़ने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए। पुस्तक मेलों, साहित्यिक गोष्ठियों और पुस्तकालयों को अधिक सक्रिय बनाया जाना चाहिए। डिजिटल माध्यमों का उपयोग भी सकारात्मक रूप से किया जा सकता है। यदि सोशल मीडिया पर सतही सामग्री की जगह सार्थक साहित्य को बढ़ावा मिले, तो नई पीढ़ी का रुझान पढ़ने की ओर बढ़ सकता है।

लेखकों की भी एक जिम्मेदारी है। उन्हें केवल लोकप्रियता के पीछे नहीं भागना चाहिए,बल्कि गंभीर अध्ययन और आत्ममंथन को महत्व देना चाहिए। अच्छा लेखक वही बन सकता है जो पहले अच्छा पाठक हो। बिना पढ़े गहराईपूर्ण लेखन संभव नहीं है। साहित्य में स्थायित्व तात्कालिक प्रसिद्धि से नहीं, बल्कि विचारों की प्रामाणिकता और संवेदनशीलता से आता है।

जनगणना : प्रथम चरण

राजेन्द्र लाहिरी
पामगढ़, छत्तीसगढ़

जनगणना प्रगणकों की सूची जारी,
प्रशिक्षण की मजबूत तैयारी,
प्रशिक्षकों ने बताया कि
कार्य में पूरी तरह जान डालना है,
एक एक तथ्य खोज निकालना है,
न रह जाए कोई कमी,
आबंटित हुआ है आपका क्षेत्र आपकी
जमीं,घर घर हर घर जाना है,
मुखिया से शालीनता से बतियाना है,
पूछना है निर्धारित चौंतीस सवाल,
आंखों देखी का रखना है खयाल,
कमरे कितने गर एक भवन,
मुखिया को करना है उत्तर का चयन,
है आवासीय भवन या गैर आवासीय,
है उस घर में कितने निवासी,
मालिक है या फिर किरायेदार,
रहते हैं कितने परिवार,
भोजन पकने का क्या है आधार,
बिजली ढिबरी
क्या प्रकाशित करता यार,
शौचालय लिखना भूल न जाना,
दीवाल देख कर है बतलाना,
साइकिल,बाइक या फिर है कार,
होगा तो न लिखना निराधार,
पानी पीने का जो स्रोत बताए,
एच एल ओ एप अंकित कर जाए,
अंत में मोबाईल नंबर ले लेना,
हो गया जनगणना
प्रथम चरण सूचना दे देना,
अंत में बारीकी से
नजरी नक्शा बनाओ,
दो प्रति उच्च कार्यालय में दे आओ,
अभी भी है आपका काम अधूरा,
जो द्वितीय चरण में हो जायेगा पूरा।

सूचना
समाचार पत्र में छपे समाचार एवं लेखों पर सम्पादक की सहमति आवश्यक नहीं है। हमारा ध्येय तथ्यों के आधार पर सटिक खबरें प्रकाशित करना है न कि किसी की भावनाओं को ठेस पहुंचाना। सभी विवादों का निपटारा अम्बिकापुर न्यायालय के अधीन होगा।
-सम्पादक

पछतावा

डॉ. सुरेश कुमार मिश्रा उरतृप्त

शहर के सबसे बड़े मल्टी-स्पेशालिटी अस्पताल के आईसीयू वार्ड के बाहर वेटिंग एरिया में एक अजीब सी गंध थी फिनाइल और मरती हुई उम्मीदों का कॉकटेल। सुमित वहां इस तरह बैठा था जैसे किसी पुराने कबाड़खाने में कोई टूटी हुई कुर्सी फेंक दी गई हो।

तभी वहां वह आई। अवनि। उसके चेहरे पर महंगे मॉइस्चराइजर की चमक थी और हाथ में लेटेस्ट आईफोन,जिसका कैमरा शायद सुमित की बदहाली को भी 4के में कैद कर सकता था।

सुमित! अंकल की हालत कैसी है? मुझे अभी पता चला तो रहा नहीं गया। तुम्हें तो पता है न,मेरा दिल कितना कमज़ोर है, अवनि ने इस अंदाज़ में कहा जैसे वह शोक सभा में नहीं,किसी अवॉर्ड फंक्शन में गेस्ट अपीयरेंस देने आई हो।

सुमित ने सूजी हुई आँखों से उसे देखा। दिल कमज़ोर है या याददाश्त अवनि? खैर,पिता जी वेंटिलेटर पर हैं। डॉक्टर कह रहे हैं कि सांसे उधार की हैं और किश्तें बहुत भारी हैं। बिल्कुल तुम्हारी उन वादों की तरह, जो तुमने पांच साल पहले किए थे।

अवनि ने एक बनावटी ठंडी आह भरी। तुम आज भी वही पुरानी बातें लेकर बैठे हो। देखो, मैंने अरेंज करवाया है। शहर के सबसे बड़े हार्ट सर्जन कल उन्हें देखेंगे। मैंने अपनी जान-पहचान लगा दी है। आखिर इंसानियत भी कोई चीज़ होती है।

सुमित की हंसी एक कराह बनकर निकली। इंसानियत? गज़ब का शब्द चुना है।

जिस इंसानियत की कोचिंग तुम मुझे मुफ़्त में दे रही हो,उसे निभाने के चक्कर में पिता जी ने अपनी ज़िंदगी की जमापूंजी उस घर में लगा दी थी, जिसे तुमने मिडिल क्लास स्मेल कहकर छोड़ दिया था। आज वह अस्पताल के बेड पर लेटे हैं और तुम अपनी कांटेक्ट लिस्ट का झुनझुना बजा रही हो?

अवनि ने चिढ़कर अपना पर्स सँभाला। मैं यहाँ मदद करने आई हूँ सुमित,ताने सुनने नहीं। यह लो चेक। इसमें इतनी रकम है कि तुम्हारे पिता जी के फेफड़े फिर से नाचने लगेंगे। मुझे अहसान के बोझ तले दबकर जीना पसंद नहीं। सुमित ने चेक हाथ में लिया। उसकी उंगलियां कांप नहीं रही थीं,बल्कि जम गई थीं। अहसान? अवनि,अहसान तो उन यादों का है जो अब बाज़ार में कौड़ियों के भाव बिकती हैं। तुम चेक नहीं,अपने पछतावे की किश्त जमा करने आई हो। तुम्हें डर है कि अगर वह मर गए,तो तुम्हारी सफलता के महल की नींव में एक लाश का

शोर सुनाई देगा। उसने चेक के दो टुकड़े किए और उन्हें पास के कचरे के डिब्बे में डाल दिया, जहाँ इस्तेमाल की हुई रुई और खून से सने पट्टियाँ पड़ी थीं।

यह क्या पागलपन है? अवनि चिल्लाई।

पागलपन नहीं, हिसाब है, सुमित ने शांत स्वर में कहा, जिसमें चीख से ज़्यादा पैनापन था। जिस पिता ने अपनी दवाइयों के पैसे बचाकर तुम्हें जन्मदिन पर वह हार दिलाया था जिसे पहनकर तुम आज किसी और की बाहों में मुस्कुराती हो, उनकी कीमत तुम्हारा यह कागज़ का टुकड़ा नहीं चुका सकता। जाओ अवनि, अपनी इस चेरिटी से किसी और का ज़मीर खरीद लेना। यहाँ तो अब सिर्फ़ मौत का इंतज़ार है,और वह तुम्हारी तरह अपॉइंटमेंट लेकर नहीं आती।अवनि के चेहरे का मेकअप पसीने के साथ बहने लगा। उसे पहली बार महसूस हुआ कि कुछ चीजें इतनी महंगी होती हैं कि उन्हें अमीर लोग कभी नहीं खरीद सकते।सुमित फिर से उसी टूटी हुई कुर्सी पर बैठ गया। अस्पताल के गलियारे में एक लाइट बार-बार झपक रही थी–बिल्कुल सुमित की ज़िंदगी की तरह। अवनि वहां से भागी, मानो उस बदबूदार वेटिंग एरिया में उसे अपनी ही रूह की सड़ांध आने लगी हो। पीछे सुमित की आँखों से एक आंसू गिरा,जो शायद उस चेक की पूरी रकम से ज़्यादा कीमती था,पर उसे पोंछने के लिए अब कोई सक्सेसफुल हाथ वहां नहीं था।

प्रकाशकः दैनिक घटती-घटना

अम्बिकापुर में 'मच्छर संकट' गहराया : सड़क,पानी,बिजली पर बहस... लेकिन जनता की नींद उड़ाने वाले आतंक पर चुप क्यों नगर निगम?

-संवाददाता-
अम्बिकापुर,23 मई 2026 (घटती-घटना)।

शहर में इन दिनों सड़क,पानी,बिजली और विकास कार्यों को लेकर राजनीतिक बयानबाजी और बैठकों का दौर लगातार जारी है, लेकिन आम जनता की रोजमर्रा की सबसे बड़ी परेशानी बन चुके 'मच्छरों के बढ़ते प्रकोप' पर नगर निगम की चुप्पी अब सवालों के घेरे में आ गई है। हालात इतने खराब हो चुके हैं कि कई मोहल्लों में लोग बिना मच्छर अगरबत्ती,कॉइल या स्प्रे के घर के भीतर सो तक नहीं पा रहे। शाम ढलते ही गली-मोहल्लों में मच्छरों का ऐसा हमला शुरू हो जाता है कि घर के बाहर खड़ा होना तक मुश्किल हो जाता है। शहर के गांधी नगर, ब्रह्मपारा,केदारपुर,महामाया रोड,नवापारा,सत्तीपारा,शिवधारी कॉलोनी, कंपनी बाजार समेत कई क्षेत्रों के लोगों का कहना है कि पिछले कई महीनों से मच्छरों की संख्या लगातार बढ़ रही है,लेकिन नगर निगम की ओर से न तो नियमित फॉगिंग दिखाई दे रही है और न ही दवाइयों का प्रभावी छिड़काव। लोगों का आरोप है कि निगम की प्राथमिकताओं में जनता की वास्तविक परेशानी कहीं दिखाई नहीं देती। करोड़ों रुपए के विकास कार्यों की चर्चा तो होती है, लेकिन जनस्वास्थ्य से जुड़े इस गंभीर मुद्दे पर ठोस कार्रवाई नजर नहीं आती।

नालियों की बदहाल स्थिति बनी बड़ी वजह : शहर के कई इलाकों में नालियों की नियमित सफाई नहीं हो रही। कहीं नालियां जाम हैं तो कहीं महीनों से गंदा पानी जमा हुआ है। खाली प्लॉटों, तालाब किनारों और कचरा डंपिंग स्थलों के आसपास मच्छरों का सबसे ज्यादा प्रकोप देखा जा रहा है। स्थानीय नागरिकों का कहना है कि बरसात शुरू होने से पहले ही स्थिति भयावह हो चुकी है। यदि समय रहते रोकथाम नहीं हुई तो मानसून के दौरान डेंगू और मलेरिया जैसी बीमारियों का खतरा कई गुना बढ़ सकता है।

'स्वच्छता सर्वेक्षण' में क्या मच्छरों की गिनती नहीं होती?

हर साल नगर निगम 'स्वच्छता अभियान' और 'स्वच्छ सर्वेक्षण' को लेकर बड़े-बड़े दावे करता है। शहर की सफाई व्यवस्था,कचरा प्रबंधन और रैंकिंग सुधारने के लिए प्रचार अभियान चलाए जाते हैं। बाहर से टीमें आकर निरीक्षण भी करती हैं। लेकिन शहरवासियों का सवाल है कि क्या इन सर्वेक्षणों में बढ़ते मच्छरों और उनसे फैलने वाली बीमारियों की स्थिति का भी आकलन किया जाता है? यदि किया जाता है,तो फिर जमीनी स्तर पर सुधार क्यों नहीं दिखाई देता? लोगों का कहना है कि नगर निगम के अधिकारी स्वच्छता को केवल फोटो, पेंटिंग और प्रचार तक सीमित कर चुके हैं, जबकि असल समस्या नालियों में जमा गंदगी, जलभराव और कचरे से पैदा हो रहे मच्छरों की है।

फॉगिंग मशीन आखिर कहां है?

शहरवासियों के बीच यह चर्चा भी तेज है कि नगर निगम के पास फॉगिंग मशीनें और मच्छर नियंत्रण के संसाधन आखिर कितने हैं और उनका उपयोग कहां हो रहा है? कई वार्डों के लोगों का कहना है कि उन्होंने महीनों से अपने क्षेत्र में फॉगिंग वाहन नहीं देखा। कुछ जगहों पर केवल औपचारिकता निभाने के लिए एक-दो बार धुआं कर दिया जाता है, लेकिन उसका कोई स्थायी असर नहीं दिखता। लोगों का आरोप है कि निगम का स्वास्थ्य विभाग कागजी कार्रवाई तक सीमित हो गया है। नियमित मॉनिटरिंग और वार्ड स्तर पर अभियान जैसी व्यवस्था नजर नहीं आती।

बजट है तो खर्च कहां हो रहा?

जनता अब यह सवाल भी पूछ रही है कि मच्छर नियंत्रण, फॉगिंग,दवा छिड़काव और जनस्वास्थ्य सुरक्षा के लिए नगर निगम के पास कितना बजट निर्धारित है? यदि हर वर्ष स्वास्थ्य मद में राशि स्वीकृत होती है तो उसका उपयोग किस प्रकार किया जा रहा है? कितनी दवाइयां खरीदी गईं? कितने वार्डों में छिड़काव हुआ? कितनी बार फॉगिंग कराई गई? इन सवालों का स्पष्ट जवाब जनता को नहीं मिल पा रहा।

बढ़ सकता है डेंगू और मलेरिया का खतरा

स्वास्थ्य विशेषज्ञों के अनुसार मच्छरों की बढ़ती संख्या केवल असुविधा नहीं बल्कि गंभीर स्वास्थ्य संकट का संकेत है। गंदगी और जलभराव के कारण डेंगू फैलाने वाले एडीज मच्छर तेजी से पनपते हैं। वहीं मलेरिया और वायरल फीवर का खतरा भी लगातार बढ़ता है। डॉक्टरों का कहना है कि रोकथाम इलाज से ज्यादा जरूरी है। यदि समय रहते सफाई, दवा छिड़काव और जनजागरूकता अभियान नहीं चलाया गया तो अस्पतालों में मरीजों की संख्या बढ़ सकती है।

जनता की मांग : घोषणाएं नहीं,जमीन पर कार्रवाई चाहिए

शहरवासियों ने नगर निगम प्रशासन से मांग की है कि:

- सभी वार्डों में नियमित फॉगिंग अभियान चलाया जाए
- नालियों और जलभराव वाले क्षेत्रों की तत्काल सफाई हो
- मच्छरनाशक दवाइयों का नियमित छिड़काव कराया जाए
- वार्डवार कार्ययोजना सार्वजनिक की जाए
- स्वास्थ्य विभाग की मॉनिटरिंग टीम सक्रिय की जाए
- खाली प्लॉटों और गंदगी फैलाने वालों पर कार्रवाई हो
- मच्छर नियंत्रण के लिए खर्च किए गए बजट का ब्यौरा सार्वजनिक किया जाए

स्मार्ट सिटी नहीं,पहले सुरक्षित शहर बनाइए...

स्थानीय लोगों का कहना है कि शहर को स्मार्ट बनाने के दावे तब तक अधूरे हैं, जब तक नागरिक रात में चैन की नींद न सो सकें।

जनता का सीधा सवाल है...

जब घर के अंदर बैठना मुश्किल हो गया है, बच्चे मच्छरों से परेशान हैं और बीमारियों का खतरा बढ़ रहा है, तब नगर निगम आखिर किस बात का इंतजार कर रहा है? अब देखने वाली बात यह होगी कि नगर निगम इस बढ़ती समस्या को गंभीरता से लेकर व्यापक अभियान चलाता है या फिर मच्छरों का आतंक केवल जनता की परेशानी बनकर रह जाएगा।

सड़क हादसे में भाजपा नेता की मौत एनएच पर अज्ञात वाहन ने मारी टक्कर

-संवाददाता-
अम्बिकापुर,23 मई 2026 (घटती-घटना)।

सरगुजा जिले के बतौली थाना क्षेत्र अंतर्गत शांतिपारा में स्थानीय भाजपा नेता व बूथ अध्यक्ष को अध्यक्ष को तेज रफ्तार अज्ञात वाहन ने टक्कर मार दी। हादसे के बाद वाहन में फंसकर वे 20 मीटर तक घिसटते चले गए,इससे उनकी मौके पर ही मौत हो गई। बाद में डायल 112 की टीम मौके पर पहुंची और उन्हें अस्पताल लाया गया, यहां जांच पश्चात डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। दरअसल भाजपा नेता शुक्रवार की रात बाइक पर सवार होकर कहीं जा रहे थे। इसी दौरान यह हादसा हो गया। बतौली थाना क्षेत्र के ग्राम पोकसरी निवासी भाजपा नेता व बूथ अध्यक्ष शिवमंगल दास (50 वर्ष) शुक्रवार की दोपहर बतौली आए थे। रात करीब 9.30 बजे बाइक से घर लौटने के दौरान अंबिकापुर-रायगढ़ नेशनल हाइवे पर स्थित शांतिपारा के पास पहुंचे ही थे कि तेज रफ्तार में आ रहे अज्ञात वाहन ने उन्हें टक्कर मार दी। टक्कर इतनी तेज थी कि बाइक वाहन के अगले हिस्से में फंस गई। इस दौरान वाहन चालक उन्हें करीब 20 मीटर तक घसीटता ले गया। हादसे में सिर,पेट सहित शरीर के अंदरूनी हिस्से में गंभीर चोट लगने से उनकी मौके पर ही मौत हो गई। हादसे के बाद वहां से गुजर रहे लोगों ने मामले की सूचना डायल 112 टीम को दी। सूचना मिलते ही टीम मौके पर पहुंची और उन्हें स्थानीय सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र ले जाया गया। यहां जांच पश्चात डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया।

परिजनों में मातम,लोगों में आक्रोश: हादसे की सूचना मिलते ही भाजपा नेता के परिजन अस्पताल पहुंचे। शव देखकर उनका रो-रोकर बुरा हाल हो गया। पुलिस ने शनिवार को पीएम पश्चात शव उनके परिजन को सौंप दिया गया। इधर भाजपा बूथ अध्यक्ष की मौत से भाजपा कार्यकर्ताओं में आक्रोश है। उन्होंने अज्ञात वाहन चालक के खिलाफ कार्रवाई की मांग की है। साथ ही कहा है कि एनएच पर बेहिसाब रफ्तार में भारी वाहन समेत अन्य छोटे चारपहिया वाहन चलते हैं। शांतिपारा में कई बार तेज रफ्तार के कारण सड़क हादसे हो चुके हैं। इनमें कई लोगों की जान भी जा चुकी है।

आकाशवाणी के 90 साल : अंबिकापुर में निकली वॉकाथन,रेडियो से जुड़ी पुरानी यादें ताजा....

जनप्रतिनिधि,पुलिस अधिकारी,कलाकार और नागरिक हुए शामिल, 'यह आकाशवाणी अंबिकापुर है...' से गूंजा मंच

-संवाददाता-
अम्बिकापुर,23 मई 2026 (घटती-घटना)।

आकाशवाणी के 90 वर्ष पूरे होने पर आकाशवाणी अंबिकापुर ने शहर में भव्य वॉकाथन आयोजित की। इसमें जनप्रतिनिधियों,प्रशासनिक अधिकारियों, कलाकारों,सामाजिक संगठनों,युवाओं और बड़ी संख्या में नागरिकों ने हिस्सा लिया। कार्यक्रम के दौरान वक्ताओं ने रेडियो से जुड़ी पुरानी यादें साझा करते हुए इसे आज भी सबसे भरोसेमंद माध्यम बताया। वॉकाथन को लुंड्रा विधायक प्रबोध मिंज,आईजी सरगुजा दीपक कुमार झा,एसपी राजेश अग्रवाल,भाजपा जिला अध्यक्ष भारत सिंह सिसोदिया,नगर निगम सभापति हरमिंदर सिंह टिन्नी,पार्षद आलोक दुबे और विजय सोनी ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। यात्रा आकाशवाणी परिसर से शुरू होकर गांधी चौक,संगम चौक,देवीगंज रोड और महामाया चौक होते हुए वापस परिसर पहुंची। पूरे रास्ते प्रतिभागियों ने आकाशवाणी के 90 वर्षों की यात्रा को याद करते हुए नारे लगाए। कार्यक्रम से पहले सहायक निदेशक कार्यक्रम प्रमेन्द्र कुमार ने अतिथियों का स्वागत किया और वॉकाथन की विशेष टी-शर्ट व कैप भेंट की।

'मन की बात ने रेडियो को नई ताकत दी : मुख्य अतिथि विधायक प्रबोध मिंज ने कहा कि रेडियो आज भी समाज के हर वर्ग तक पहुंचने वाला सशक्त माध्यम है। उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 'मन की बात' कार्यक्रम का उल्लेख करते हुए कहा कि रेडियो संवाद का प्रभावी मंच बना हुआ है। भाजपा जिला अध्यक्ष भारत सिंह सिसोदिया ने कहा कि फुलवारी और युववाणी जैसे कार्यक्रमों से उनका गहरा जुड़ाव रहा है। उन्होंने कहा कि बदलते दौर में भी रेडियो की प्रासंगिकता बनी हुई है।

'एक समय पूरा देश रेडियो के आसपास जुट जाता था : आईजी दीपक कुमार झा ने कहा कि मोबाइल युग में भी रेडियो सबसे विश्वसनीय सूचना और मनोरंजन का माध्यम है। उन्होंने जयमाला, कृषि जगत और बिनाका गीतमाला जैसे कार्यक्रमों को याद करते हुए कहा कि एक समय ऐसा था जब पूरा परिवार रेडियो के आसपास बैठकर कार्यक्रम सुनता था। उन्होंने अमीन सयानी को याद करते हुए कहा कि रेडियो लोगों को भावनात्मक रूप से जोड़ता है। एसपी राजेश अग्रवाल ने गांव की चौपालों में बैठकर रेडियो सुनने की स्मृतियां साझा कीं। उन्होंने युववाणी और चौपाल जैसे कार्यक्रमों का उल्लेख करते हुए कहा कि रेडियो ने जीवन में बहुत कुछ सिखाया।

'यह आकाशवाणी अंबिकापुर है...' से शुरू किया संबोधन : नगर निगम सभापति हरमिंदर सिंह टिन्नी ने अपने संबोधन की शुरुआत 'यह आकाशवाणी अंबिकापुर है...' शैली से की। उन्होंने कहा कि आकाशवाणी ने ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में अपनी अलग पहचान बनाई है। पार्षद आलोक दुबे ने बताया कि उनके परिवार के सदस्य आकाशवाणी में अधिकारी रहे हैं। उन्होंने 'भोको दास' और सरगुजिहा चौपाल जैसे कार्यक्रमों को याद किया।

समाजसेवी कैलाश मिश्रा ने आकाशवाणी अंबिकापुर के पहले स्टेशन डायरेक्टर अमीक हनफी और पुराने कलाकारों के योगदान को याद किया। कार्यक्रम में नगर निगम आयुक्त डीएन कश्यप, पार्षद पपिंदर सिंह, शशिकांत जायसवाल, कांत दुबे, रविशंकर पांडेय, शैलेश कुमार सिंह, डॉ. सीके मिश्रा, डॉ. संदीप शर्मा, डॉ. प्रशांत शर्मा, अमलेंदु मिश्रा, आदित्य नारायण वर्मा, मुकेश तिवारी सहित बड़ी संख्या में लोग मौजूद रहे। अंत में सहायक निदेशक कार्यक्रम प्रमेन्द्र कुमार ने आभार व्यक्त करते हुए कहा कि स्वतंत्र भारत की पहली सूचना से लेकर देश की कई ऐतिहासिक घटनाओं का साक्षी आकाशवाणी रहा है और 90 वर्षों में उसने प्रसारण की मजबूत परंपरा स्थापित की है।

कलयुगी पिता ने 11 वर्षीय बेटी के साथ किया बलात्कार,आरोपी गिरफ्तार

-संवाददाता-
अम्बिकापुर,23 मई 2026 (घटती-घटना)।

कलयुगी पिता ने अपने ती 11 वर्षीय बेटी के साथ बलात्कार की घटना को अंजाम दिया है। घटना 20 मई की दोपहर की है। इस दौरान पीड़िता की मां घर पर नहीं थी। 21 मई को पिता जब घर पर नहीं था तो बालिका ने घटना की जानकारी मां को दी। मां की रिपोर्ट पर पुलिस ने आरोपी पिता को गिरफ्तार कर जेल दाखिल कर दिया है। जानकारी के अनुसार एक युवक पत्नी व बेटी के साथ किराए के मकान में रहता था। 20 अप्रैल को युवक की पत्नी घर पर नहीं थी। इसका फायदा उठाते हुए कलयुगी पिता ने अपने ती बेटी के साथ दोपहर में बलात्कार की घटना को अंजाम दिया। घटना के बारे में किसी को बताने पर उसके साथ मारपीट करने की धमकी दी थी। इस लिए मां के आने के बाद बच्ची नहीं बताई। 21 मई को जब पिता घर में नहीं था तो पीड़िता घटना की जानकारी मां को दी। मां ने बेटी के साथ 22 मई की रात को थाना पहुंचकर घटना की जानकारी पुलिस को दी। पत्नी की रिपोर्ट पर पुलिस ने आरोपी के खिलाफ अपराध दर्ज कर उसे गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस के अनुसार आरोपी ने एक अन्य के साथ छेड़छाड़ के मामले में जेल जा चुका है। वहीं इससे पूर्व भी अपनी बेटी के साथ छेड़छाड़ व बलात्कार जैसी घटना को अंजाम दे चुका था। लेकिन घर का मामला होने के कारण परिवार के लोग दबा दिए थे। पिता द्वारा हैवानित किए जाने की घटना से लोगों में आक्रोश है। लोगों ने उसे फांसी की सजा की मांग की है। लोगों को आक्रोश को देखते हुए पुलिस ने आरोपी को सुरक्षित तरीके से वाहन में लेकर न्यायालय पहुंची। जहां पुलिस ने न्यायालय में पेश कर उसे जेल भेज दिया। वहीं वकील एसोसिएशन ने भी मामला सही पाए जाने पर आरोपी की पैरवी नहीं करने की बात कही है।

न्यू बस स्टैंड की व्यवस्थाओं में सुधार तेज,बंद वाटर एटीएम होंगे चालू

महापौर मंजूषा भगत के निर्देश पर जल, सफाई और शौचालय व्यवस्था दुरुस्त करने दो दिन की समय-सीमा

-संवाददाता-
अम्बिकापुर,23 मई 2026 (घटती-घटना)।

न्यू बस स्टैंड में पेयजल,सफाई और सार्वजनिक सुविधाओं को लेकर लगातार मिल रही शिकायतों के बाद नगर निगम प्रशासन हरकत में आ गया है। महापौर श्रीमती मंजूषा भगत के निर्देश पर महापौर परिषद के सदस्य एवं जल प्रदाय विभाग प्रभारी जितेंद्र सोनी तथा सफाई विभाग प्रभारी ममता तिवारी ने शुक्रवार को न्यू बस स्टैंड का निरीक्षण किया और अधिकारियों को दो दिन के भीतर व्यवस्थाएं दुरुस्त करने के निर्देश दिए। निरीक्षण के दौरान बस स्टैंड में बंद पड़े वाटर एटीएम, वाटर कूलर,सफाई व्यवस्था,सार्वजनिक शौचालय और यूरिनल की स्थिति का जायजा लिया गया। अधिकारियों को तत्काल सुधार कार्य शुरू करने के निर्देश दिए गए।

वाटर एटीएम और वाटर कूलर हुए चालू : जल प्रभारी जितेंद्र सोनी ने बताया कि न्यू बस स्टैंड स्थित वाटर एटीएम और वाटर कूलर की मरम्मत कर उन्हें चालू करा दिया गया है। साथ ही पेयजल की नियमित व्यवस्था सुनिश्चित करने के निर्देश दिए गए हैं। सफाई विभाग द्वारा परिसर में सफाई अभियान भी शुरू कर दिया गया है। उन्होंने बताया कि सार्वजनिक शौचालयों और यूरिनल में बिजली व्यवस्था, सिविल मरम्मत कार्य तथा दुकान संचालकों को व्यवस्थित करने के लिए निगम अधिकारियों और कर्मचारियों को दो दिन का समय दिया गया है।

शहर के अन्य वाटर एटीएम भी होंगे दुरुस्त : जितेंद्र सोनी ने जानकारी दी कि न्यू बस स्टैंड के अलावा गांधीनगर सब्जी बाजार और गुदरी बाजार में स्थापित वाटर एटीएम का भी सुधार और मरम्मत कर उन्हें चालू कराया गया है। उन्होंने बताया कि नगर निगम क्षेत्र में कुल 8 वाटर एटीएम स्थापित हैं। इनका संचालन और संधारण पांच वर्षों तक चयनित एजेंसी को करना था, लेकिन अपरिहार्य कारणों से एजेंसी द्वारा मेंटेनेंस नहीं किए जाने के कारण अधिकांश उपकरण बंद पड़े थे। अब महापौर मंजूषा भगत और जल प्रदाय विभाग द्वारा आम जनता की सुविधा को देखते हुए सभी बंद वाटर एटीएम को चरणबद्ध तरीके से सुधारने का निर्णय लिया गया है। प्रथम चरण में तीन वाटर एटीएम की मरम्मत के लिए निगम मद से स्वीकृति दी गई है।

दूसरे चरण में कंपनी बाजार, सरगांवा उद्यान (वाटर पार्क), जिला अस्पताल, मैरीन ड्राइव और स्टेडियम ग्राउंड के सामने स्थापित वाटर एटीएम की मरम्मत कर उन्हें पुनः शुरू किया जाएगा। निरीक्षण के दौरान आकाश गुप्ता, अनिल तिवारी, शैलेंद्र शर्मा, जल एवं विद्युत अधिकारी प्रशांत खुल्लर, सफाई विभाग से शक्ति पांडेय, स्वर्ण मेहता, राजस्व अधिकारी विजय कुजूर, शिवेंद्र बहादुर सिंह सहित निगम के अधिकारी-कर्मचारी मौजूद रहे।

90 वर्षीय सास को पीठ पर लादकर बैंक पहुंची बहू

500 रुपए पेंशन के लिए हर माह 6 किमी पैदल सफर,वीडियो वायरल

-संवाददाता-
मैनपाट,23 मई 2026 (घटती-घटना)।

मैनपाट से एक मार्मिक तस्वीर सामने आई है, जिसने सरकारी योजनाओं और व्यवस्था पर सवाल खड़े कर दिए हैं। यहां एक बहू अपनी 90 वर्षीय सास को पीठ पर लादकर 500 रुपए की वृद्धा पेंशन दिलाने बैंक पहुंची। रास्ते में स्थानीय युवाओं ने इसका वीडियो बनाकर सोशल मीडिया पर वायरल कर दिया। मैनपाट विकासखंड के ग्राम कुनिया के जंगलपारा निवासी 90 वर्षीय सोमारी बाई चलने-फिरने में असमर्थ हैं। उन्हें वृद्धा पेंशन के रूप में हर माह 500 रुपए मिलते हैं। गांव से नर्मदापुर स्थित बैंक की दूरी करीब 6 किलोमीटर है। ऐसे में उनकी बहू सुखमनिया बाई हर माह उन्हें पीठ पर लादकर उबड़-खाबड़ रास्तों और नदी-नालों को पार करते हुए बैंक तक ले जाती है। बहू सुखमनिया ने बताया कि पहले पेंशन की राशि घर तक पहुंच जाती थी, लेकिन अब बैंक जाकर फिंगर प्रिंट सत्यापन कराना जरूरी हो गया है। आर्थिक स्थिति कमजोर होने के कारण वाहन की व्यवस्था भी नहीं हो पाती। यह वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल होने के बाद लोग व्यवस्था पर सवाल उठा रहे हैं।

स्थानीय लोगों का कहना है कि चलने-फिरने में असमर्थ बुजुर्गों के लिए बैंकिंग नियमों में राहत मिलनी चाहिए, ताकि उन्हें घर पर ही पेंशन मिल सके।

कीटनाशक सेवन 14 वर्षीय बेटा की मौत

-संवाददाता-
अम्बिकापुर,23 मई 2026 (घटती-घटना)।

मामूली सी बात पर बेटा को डांटना पिता के लिए महंगा पड़ गया। क्षुब्ध होकर 14 वर्षीय बेटा ने कीटनाशक सेवन कर लिया। 14 दिनों तक इलाज के बाद उसकी मौत हो गई। जानकारी के अनुसार सूरजपुर जिला के जयनगर थाना अंतर्गत ग्राम कमलपुर निवासी ओबजीत बर्मन पिता चितरंजन बर्मन 14 वर्ष, 3 पुत्र और एक पुत्री हैं। 9 मई की सुबह परिवार के सदस्यों के साथ सबसे छोटा पुत्र ओबजीत भी गेंदा फूल तोड़ रहा था, और काफी फूल जमीन में गिरा रहा था। इस पर पिता ने फूल कम तोड़ रहे हो, ज्यादा गिरा रहे हो, कहते हुए फटकार भरे लहजे में अपने पुत्र ओबजीत को घर जाने के लिए कहा। इसके बाद पिता गांव के ही माला दुकान में बाड़ी से तोड़े गए फूल को देने के लिए चला गया था। इस बीच उसकी पत्नी फोन करके बताई कि ओबजीत जहर पी लिया है। स्वजन उसे आननफानन में मेडिकल कॉलेज अस्पताल अंबिकापुर लेकर पहुंचे, और इलाज के बाद 10 मई को छुट्टी कराकर होली क्रॉस अस्पताल में भर्ती कराए थे।

CMYK

भीषण गर्मी में बिजली व्यवस्था फेल...जिला मुख्यालय अंधेरे और लो-वोल्टेज की मार से बेहाल

बिजली विभाग की 'आंख-मिचौली' से जनता त्रस्त,दिनभर कटौती और रातभर बेचैनी

- ट्रांसफार्मर ओवरलोड,केबलों में आग...जिला मुख्यालय की बिजली व्यवस्था भगवान भरोसे
- गर्मी कम,बिजली विभाग ज्यादा तपा रहा : सोशल मीडिया पर फूटा लोगों का गुस्सा
- बिना आंधी-पानी के घंटों गुल हो रही बिजली,जनता ने पूछा–आखिर समस्या क्या है?
- सुशासन के दावों के बीच बिजली संकट गहराया,जिला मुख्यालय में लोग परेशान

- जर्जर केबल और कमजोर ट्रांसफार्मर बने मुसीबत, बिजली कटौती से कारोबार भी प्रभावित
- बिजली संकट पर जनप्रतिनिधियों की चुप्पी से बढ़ा लोगों का गुस्सा
- हर साल गर्मी आते ही क्यों ध्वस्त हो जाती है बिजली व्यवस्था? जनता ने उठाए सवाल
- पंखे बंद, कूलर शांत और जनता परेशानः जिला मुख्यालय में बिजली व्यवस्था चरमराई

-रवि सिंह-
बैकुंठपुर/कोरिया,23 मई 2026 (घटती-घटना)।

जिला मुख्यालय इन दिनों भीषण गर्मी के साथ-साथ बदहाल बिजली व्यवस्था की दोहरी मार झेल रहा है,तापमान लगातार बढ़ रहा है,लेकिन उससे कहीं ज्यादा लोगों का पारा बिजली विभाग की लचर व्यवस्था को लेकर चढ़ा हुआ है, हालत यह है कि बिना बारिश, बिना आंधी और बिना किसी बड़े तकनीकी कारण के भी दिनभर बिजली की आंख-मिचौली जारी रहती है, कभी कुछ मिनट तो कभी घंटों तक बिजली गुल रहने से आमजन का जीवन पूरी तरह प्रभावित हो रहा है, शहर के लोग अब मजाक में कहने लगे हैं कि बिजली कब जाएगी और कब आएगी, इसका अंदाजा मौसम विभाग भी नहीं लगा सकता, गर्मी के इस दौर में पंखे बंद हैं, कूलर जवाब दे चुके हैं और रात की नींद बिजली विभाग की मर्जी पर निर्भर हो गई है।

गर्मी से ज्यादा बिजली कटौती ने बढ़ाई परेशानी

एक तरफ आसमान से आग बरस रही है, दूसरी तरफ बिजली कटौती ने लोगों की मुश्किलें कई गुना बढ़ा दी हैं, घरों में छोटे बच्चे, बुजुर्ग और बीमार लोग सबसे ज्यादा परेशान हैं, कई परिवार रातभर छत और आंगन में जागकर समय बिताने को मजबूर हैं, लोगों का कहना है कि पहले बिजली केवल खराब मौसम में जाती थी, लेकिन अब बिना किसी वजह के भी सप्लाई बार-बार बाधित हो रही है, दिनभर में कई बार बिजली कटने और लो-वोल्टेज की समस्या के कारण लोगों के इलेक्ट्रॉनिक उपकरण भी प्रभावित हो रहे हैं, कई मोहल्लों में फ्रिज सिर्फ शोपीस बनकर रह गया है। पानी ठंडा नहीं हो पा रहा, कूलर हवा नहीं दे रहे और इन्वर्टर भी लगातार ट्रिप हो रहे हैं।

बिजली विभाग का फोन भी अब सजावटी वस्तु बन गया...

शहर के लोगों में बिजली विभाग के प्रति नाराजगी लगातार बढ़ती जा रही है,लोगों का आरोप है कि शिकायत करने पर या तो फोन उठता नहीं या फिर जवाब मिलता है लाइन देखी जा रही है,कई नागरिकों का कहना है कि बिजली विभाग की शिकायत व्यवस्था अब केवल औपचारिकता बनकर रह गई है, घंटों बिजली बंद रहने के बावजूद लोगों को यह तक नहीं बताया जाता कि समस्या क्या है और कब तक सप्लाई बहाल होगी, लोगों का कहना है कि विभागीय अधिकारी केवल फॉल्ट सुधारने तक सीमित हैं, जबकि स्थायी समाधान की दिशा में कोई गंभीर प्रयास दिखाई नहीं देता।

व्यापार और छोटे कारोबार पर भी असर...

लगातार बिजली कटौती का असर अब बाजार और छोटे व्यवसायों पर भी साफ दिखाई देने लगा है। छोटे दुकानदारों को भारी परेशानी उठानी पड़ रही है, आइसक्रीम, डेयरी और कोल्ड ड्रिंक बेचने वाले व्यापारियों का कहना है कि बिजली नहीं रहने से उनका सामान खराब होने लगा है, साइबर कैफे, फोटो स्टूडियो और इलेक्ट्रॉनिक दुकानों का काम प्रभावित हो रहा है, छोटे उद्योगों और वेल्डिंग, मोटर रिपेयर जैसे काम करने वाले लोगों को भी आर्थिक नुकसान उठाना पड़ रहा है।

जर्जर केबलें और ओवरलोड ट्रांसफार्मर बने संकट की जड़- स्थानीय नागरिकों का आरोप है कि बिजली विभाग वर्षों से पुराने ढांचे के भरोसे शहर की बढ़ती आबादी और बढ़ते लोड को संभालने की कोशिश कर रहा है, कई इलाकों में बिजली केबल अत्यधिक गर्म होकर जलने लगी हैं, जगह-जगह स्पार्किंग और केबल में आग लगने की घटनाएं सामने आ रही हैं,लोगों का कहना है कि घटिया गुणवत्ता की सामग्री और समय पर रखरखाव नहीं होने के कारण यह स्थिति पैदा हुई है, शहर के अधिकांश ट्रांसफार्मर वर्तमान जरूरतों के मुकाबले कम क्षमता वाले बताए जा रहे हैं, पहले जिन इलाकों में सीमित घर थे, वहां अब आबादी कई गुना बढ़ चुकी है, घरों में एसी, कूलर, फ्रिज और अन्य बिजली उपकरणों का उपयोग बढ़ने के बावजूद ट्रांसफार्मरों की क्षमता नहीं बढ़ाई गई, नतीजा यह है कि ट्रांसफार्मर ओवरलोड होकर बार-बार ट्रिप हो रहे हैं। कई क्षेत्रों में लो-वोल्टेज की समस्या इतनी गंभीर हो चुकी है कि मोटर तक ठीक से नहीं चल पा रही।

सोशल मीडिया बना जनता का गुस्सा निकालने का मंच

जब शिकायतों के बाद भी जमीनी स्तर पर सुधार नहीं हुआ तो लोगों ने सोशल मीडिया का सहारा लेना शुरू कर दिया, फेसबुक,व्हाट्सऐप और अन्य सोशल प्लेटफॉर्म पर बिजली व्यवस्था को लेकर लगातार पोस्ट और टिप्पणियां वायरल हो रही हैं,कई लोगों ने तंज कसते हुए लिखा गर्मी से कम, बिजली विभाग की कृपा से ज्यादा पसीना निकल रहा है, कुछ नागरिकों ने जले हुए केबल और ओवरलोड ट्रांसफार्मर की तस्वीरें साझा करते हुए सवाल उठाए कि आखिर हर साल गर्मी आते ही बिजली व्यवस्था क्यों जवाब दे देती है, सोशल मीडिया पर जनप्रतिनिधियों की चुप्पी को लेकर भी सवाल उठाए जा रहे हैं। लोगों का कहना है कि चुनाव के समय बड़े-बड़े वादे किए गए थे, लेकिन अब जनता की परेशानियों पर कोई गंभीर पहल दिखाई नहीं दे रही।

जनता ने दी आंदोलन की चेतावनी

स्थानीय नागरिकों ने मांग की है कि जर्जर बिजली केबलों को तत्काल बदला जाए,अतिरिक्त क्षमता वाले ट्रांसफार्मर लगाए जाएं और अनावश्यक बिजली कटौती पर रोक लगाई जाए,लोगों ने यह भी कहा कि यदि जल्द स्थायी समाधान नहीं हुआ तो जनता सड़क पर उतरने को मजबूर होगी, फिलहाल जिला मुख्यालय में लोग हर दिन यही उम्मीद कर रहे हैं कि शायद आज बिजली कुछ ज्यादा देर तक रहे। लेकिन मौजूदा हालात देखकर ऐसा लगता है कि गर्मी से ज्यादा 'बिजली संकट' ने लोगों का चैन छीन लिया है।

'सुशासन' के दौर में बिजली संकट पर उठ रहे सवाल

दिलचस्प बात यह है कि प्रदेश में इन दिनों 'सुशासन तिहार' के जरिए सरकार जनता तक पहुंचने और समस्याओं के समाधान का दावा कर रही है,लेकिन जिला मुख्यालय की बिजली व्यवस्था सरकार के इन दावों पर सवाल खड़े करती नजर आ रही है, लोगों का कहना है कि यदि जिला मुख्यालय की स्थिति इतनी खराब है, तो दूरस्थ इलाकों की हालत का अंदाजा आसानी से लगाया जा सकता है।

अवैध उत्खनन एवं परिवहन पर खनिज विभाग की कार्रवाई

रेत उत्खनन में संलिप्त चौन माउंटेड मशीन सील,अवैध ईंट परिवहन करने पर एक ट्रक भी जब्त...

-संवाददाता-
बलरामपुर,23 मई 2026 (घटती-घटना)।

कलेक्टर श्रीमती चंदन संजय त्रिपाठी के निर्देशानुसार जिले में अवैध उत्खनन एवं परिवहन पर लगातार कार्रवाई की जा रही है। इसी कड़ी में खनिज अधिकारी श्री राहुल गुलाटी के नेतृत्व में खनिज विभाग की टीम द्वारा ग्राम पंचायत पचावल में संचालित रेत खदान का औचक निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान विभिन्न माध्यमों से प्राप्त शिकायतों के आधार पर जांच की गई। जांच में एक चौन माउंटेड मशीन को रेत उत्खनन कार्य में संलिप्त पाए जाने पर पांगन नदी के किनारे ही सील करने की कार्रवाई की गई। विभाग द्वारा यह कार्रवाई उत्खनन पट्टा की शर्तों के उल्लंघन पाए जाने पर की गई है। इस दौरान क्षेत्र में अवैध रूप से ईंट परिवहन करते पाए जाने पर एक ट्रक वाहन को भी जब्त किया गया। जब्त वाहन को पुलिस थाना सनावल की अभिरक्षा में रखा गया है। खनिज विभाग अधिकारी ने बताया कि संबंधित वाहन मालिकों के विरुद्ध छत्तीसगढ़ गौण खनिज नियम, 2015 की धाराओं के अंतर्गत नियमानुसार कार्रवाई की जाएगी। उन्होंने कहा कि विभाग द्वारा जिले में अवैध उत्खनन एवं परिवहन पर लगातार निगरानी रखी जा रही है तथा आगे भी इस प्रकार की कार्रवाई निरंतर जारी रहेगी।

खेत में पानी डालने गया था चाचा,कुएं में झांका तो मिली 19 वर्षीय भतीजी,हालत देख रह गया सन्न

-संवाददाता-
बिश्रामपुर,23 मई 2026 (घटती-घटना)।

सूरजपुर जिले के बिश्रामपुर थाना क्षेत्र से एक ऐसा मामला सामने आया है,जिसने एक परिवार को झकझोर दिया। घर से 2 दिन से गायब एक 19 वर्षीय युवती की लाश खेत में स्थित कुएं में उस समय मिली, जब उसका चाचा पानी पटाने गया था। भतीजी की लाश देखकर वह सन्न रह गया। इसके बाद परिजनों व गांव वालों की मदद से पुलिस की मौजूदगी में उसका शव बाहर निकाला गया। दरअसल 2 दिन पूर्व 19 वर्षीय एक युवती अपने छोटे भाई से मोबाइल मांग रही थी। यह देख मां ने डांट लगा दी तो वह घर से निकल गई थी। 2 दिन तक परिजन उसकी खोजबीन करते रहे, लेकिन उसका कहीं पता नहीं चल रहा था। इधर युवती ने कुएं में कूदकर आत्महत्या कर ली थी। सूरजपुर जिले के बिश्रामपुर थाना क्षेत्र अंतर्गत ग्राम पंचायत रामनगर के डबरीपारा निवासी 19 वर्षीय मनीषा मानिकपुरी पिता नंदलाल मानिकपुरी 20 मई को घर में ही थी। वह अपने छोटे भाई से मोबाइल मांग रही थी। जब भाई ने मोबाइल देने से मना किया तो वह उससे विवाद करने लगी। यह देख उसकी मां ने उसे डांट लगाते हुए कहा कि मोबाइल) के लिए तुम दोनों क्यों लड़ रहे हो। मां की यह बात युवती को नागवार गुजरी। वह इतना गुस्सा हो गई कि बिना बताए घर से बाहर निकल गई। मां समेत घरवालों ने यह सोचा कि आस-पास ही कहीं गई होगी, लौट आएगी। लेकिन वह शाम से लेकर रात तक घर नहीं लौटी। रातभर युवती के घर नहीं लौटने पर परिजन ने उसकी खोजबीन शुरु की। गांव से लेकर रिश्तेदारों तक उसके बारे में पूछताछ की, लेकिन उसका कहीं पता नहीं चल सका। इससे मां भी अपने आप को कोसने लगी कि उसने आखिर बेटी को क्यों फटकार लगाई। परिजन मनीषा की खोजबीन में लगे ही थे। इसी बीच 22 मई की सुबह युवती का चाचा खेत में पानी डालने गया था। उसने जब कुएं में झांक कर देखा तो पानी में एक युवती का शव तैर रहा था। कपड़े देखकर उसे लग गया था कि यह उसकी भतीजी का शव है।

सरगुजा 30 में नि:शुल्क अध्ययन हेतु प्रवेश परीक्षा सम्पन्न,188 मेधावी विद्यार्थी हुए शामिल

-संवाददाता-
अम्बिकापुर,23 मई 2026 (घटती-घटना)।

कलेक्टर श्री अजीत बसंत के निर्देश एवं जिला शिक्षा अधिकारी डॉ. दिनेश झा के मार्गदर्शन में आज दिनांक 23 मई 2026 को प्रातः 11:00 बजे से दोपहर 2:00 बजे तक शासकीय बहुउद्देशीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय अम्बिकापुर में 'सरगुजा 30' के अंतर्गत नि:शुल्क अध्ययन हेतु प्रवेश परीक्षा का सफल आयोजन किया गया। इस परीक्षा में जिले के समस्त विकासखण्डों एवं दूरस्थ ग्रामीण-वनांचल क्षेत्रों से पहुंचे कुल 188 मेधावी छात्र-छात्राओं ने कक्षा 9वीं, 10वीं एवं 12वीं (गणित एवं जीव विज्ञान संकाय) में प्रवेश हेतु सहभागिता की।

विद्यार्थियों के लिए उच्च मानक के बहुविकल्पीय प्रश्नपत्र जिले के वरिष्ठ विषय विशेषज्ञ शिक्षाविदों द्वारा तैयार किए गए थे। परीक्षा में कुल 150 प्रश्न निर्धारित समयावधि 3 घंटे में हल करने थे तथा गलत उत्तरों के लिए ऋणात्मक अंक का भी प्रावधान रखा गया था। उल्लेखनीय है कि 'सरगुजा 30' विगत तीन वर्षों से संचालित एक महत्वाकांक्षी शैक्षणिक पहल है, जिसके अंतर्गत चयनित विद्यार्थियों को संभाग के ऐतिहासिक शासकीय बहुउद्देशीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय अम्बिकापुर परिसर में नि:शुल्क अध्ययन-अध्यापन की सुविधा प्रदान की जाती है। विद्यार्थियों के लिए जिला खनिज न्यास मद से पृथक छात्रावास एवं भोजन की नि:शुल्क व्यवस्था उपलब्ध कराई जाती है। साथ ही विषय विशेषज्ञ शिक्षकों की समर्पित टीम द्वारा गुणवत्तापूर्ण शिक्षण कार्य कराया जाता है। प्रवेश हेतु यह अनिवार्य किया गया है कि विद्यार्थी सरगुजा जिले के शासकीय हाईस्कूल अथवा उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत हों। परीक्षा के सफल एवं सुव्यवस्थित संचालन हेतु नोडल एवं सहायक नोडल अधिकारियों के रूप में प्राचार्य शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय सरगंवा, प्राचार्य हाईस्कूल सेदम, प्राचार्य हाईस्कूल अजिरमा, प्राचार्य शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय रामपुर, प्राचार्य शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय कत्तकालो, प्राचार्य हाईस्कूल डूमरडीह, प्राचार्य शासकीय बहुउद्देशीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय अम्बिकापुर सहित सरगुजा 30 के समस्त शिक्षक-शिक्षिकाओं एवं ए.पी.सी. समग्र शिक्षा (माध्यमिक) की सक्रिय सहभागिता रही।

सूने मकान से बाइक, जेवर और नकद रकम की चोरी,संदेहियों से चल रही पूछताछ

-संवाददाता-
अम्बिकापुर,23 मई 2026 (घटती-घटना)।

शहर के बौरीबांध में रहने वाली महिला के सूने मकान से चोरों ने जेवरात,बाइक और 8 हजार रुपये नकद पार कर दिया। महिला ने मामले की रिपोर्ट कोतवाली में दर्ज कराई है। जानकारी के अनुसार बौरीपारा तालाब, काली मंदिर के पास रहने वाली फुलेश्वरी कुजूर, 20 मई को अपने पुत्र के साथ जमशेदपुर गई थी। 23 मई को वापस लौटी तो घर के पूरा सामान बिखरा हुआ था। घर के अंदर कमरे का ताला और अलमारी खुला था। अलमारी में रखा सोने-चांदी का जेवरात, 8 हजार रुपए नकद व घर में रखे बइक नहीं था। चोरी का शक मोहल्ले के ही एक लडक़े पर होने के बाद जब वे उसकी तलाशी लिए तो जेब में सोने का लॉकेट और कान का जेवर मिला। पूछताछ में उसने चोरी की वारदात को पड़ोस में रहने वाले एक युवक के साथ करना बताया है।

नाम परिवर्तन सूचना

प्ररूप-(एक)

मै महेश कुमार जायसवाल (माता/पिता/ पालक का नाम) सुपुत्र स्व0 मोहरलाल जायसवाल गाँव/शहर राजबंध तहसील उदयपुर जिला -सरगुजा छ0ग0 राज्य ने अपने नाबालिग सुपुत्र/ सुपुत्री का नाम सुयश जायसवाल (पुराना नाम) से बदल कर आर्यश जायसवाल (नया नाम) रख लिया है।

पालक
महेश कुमार जायसवाल
उदयपुर.जिला सरगुजा छ0ग0

नाम परिवर्तन सूचना

प्ररूप-(एक)

मै महेश कुमार जायसवाल (माता/पिता/ पालक का नाम) सुपुत्र स्व0 मोहरलाल जायसवाल गाँव/शहर राजबंध तहसील उदयपुर जिला -सरगुजा छ0ग0 राज्य ने अपने नाबालिग सुपुत्र/ सुपुत्री का नाम शिवांश कुमार जायसवाल (पुराना नाम) से बदल कर विवान जायसवाल (नया नाम) रख लिया है।

पालक
महेश कुमार जायसवाल
उदयपुर.जिला सरगुजा छ0ग0

मेडिकल कॉलेज अस्पताल में तनाव प्रबंधन पर विशेष प्रशिक्षण

आर्ट ऑफ लिविंग टीम ने कर्मचारियों को बताए मानसिक संतुलन के उपाय

-संवाददाता-
अम्बिकापुर,23 मई 2026 (घटती-घटना)।

राजमाता देवेंद्र कुमारी सिंहदेव शासकीय चिकित्सा महाविद्यालय संबद्ध चिकित्सालय में सीएनई सेल के तत्वावधान में 'स्ट्रेस मैनेजमेंट स्किल्स' विषय पर विशेष प्रशिक्षण एवं मार्गदर्शन सत्र आयोजित किया गया। कार्यक्रम मेडिसिन लेक्चर हॉल में हुआ, जिसमें चिकित्सक, नर्सिंग स्टाफ, नर्सिंग छात्र-छात्राएं एवं अस्पताल के कर्मचारियों ने भाग लिया। कार्यक्रम का उद्देश्य अस्पताल में कार्यरत कर्मचारियों को तनाव प्रबंधन की व्यावहारिक तकनीकों से अवगत कराना था, ताकि कार्यक्षमता, सकारात्मक कार्य व्यवहार और मानसिक स्वास्थ्य में सुधार हो सके। आर्ट ऑफ लिविंग के मास्टर ट्रेनर संजय अग्रवाल ने प्रशिक्षण के दौरान तनाव कम करने, मानसिक संतुलन बनाए रखने और सकारात्मक सोच विकसित करने के उपाय बताए। इस दौरान योग, श्वास तकनीक और मानसिक एकाग्रता बढ़ाने के अभ्यास भी कराए गए। कार्यक्रम में मेडिकल कॉलेज के डीन डॉ. अविनाश मेश्राम, अस्पताल अधीक्षक डॉ. आरसी आर्या, सिविल सर्जन डॉ. जेके. रेलवानी सहित अन्य अधिकारी और कर्मचारी मौजूद रहे। अस्पताल प्रबंधन ने कर्मचारियों को तनावमुक्त होकर मरीजों की बेहतर सेवा देने के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम के अंत में प्रशिक्षक संजय अग्रवाल को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया।

कार्यालय,कलेक्टर (आबकारी) जिला बलरामपुर-रामानुजगंज (छत्तीसगढ़)

/ / तृतीय निविदा सूचना / /

क्रमांक/आब./ठेका/ 2026/566 बलरामपुर,दिनांक 21/05/20026

सर्वसाधारण की विशेष जानकारी के लिये यह तृतीय निविदा सूचना प्रकाशित की जाती है, कि बलरामपुर जिले में नवीन कम्पोजिट विदेशी मदिरा दुकान रघुनाथनगर, जनपद पंचायत वाड्रफनगर का संचालन के लिए वित्तीय वर्ष 2026-27 की अवधि के लिए दुकान / भवन सह परिसर भाड़े में लेने हेतु कार्यालय कलेक्टर (आबकारी). बलरामपुर-रामानुजगंज (छ.ग.) का निविदा सूचना क्र. / आब. / ठेका / 2026 / श्रृखला8776/2026 बलरामपुर, दिनांक 24.04.2026 के माध्यम से दिनांक 08.05.2026 तक दोपहर 3:00 बजे तक निविदा आमंत्रित की गई थी। परन्तु दिनांक 08.05.2026 को दोपहर 3:00 बजे प्राप्त निविदा को खोला गया था लेकिन निविदा असफल रहा। द्वितीय निविदा असफल होने कारण से जिला स्तरीय उपसमिति द्वारा तृतीय निविदा निर्धारित शर्तों के अधीन जारी करने का निर्णय लिया गया है अतः तृतीय निविदा आमंत्रित किया जाना है। इच्छुक निविदाकारों से सीलबंद लिफाफे में निम्न विवरण अनुसार निविदा प्रपत्र यथा दुकान का नाम, अवस्थिति एवं निविदा की शर्तें व अन्य आवश्यक जानकारी कार्यालय, जिला आबकारी अधिकारी सह जिला प्रबंधक, सी.एस.एम.सी.एल. बलरामपुर-रामानुजगंज (छ.ग.) के कार्यालय से अवकाश के दिनों को छोड़कर शेष दिवसों में प्राप्त की जा सकती है।

1. निविदा फार्म की कीमत	-	1000/- (डी. डी. / चेक जो जिला प्रबंधक सी.एस.एम.सी.एल. रायपुर के नाम से देय हो)
2. निविदा फार्म प्राप्त करने की अंतिम तिथि	-	02.06.2026 दोपहर 12:00 बजे तक
3. निविदा फार्म जमा करने की अंतिम तिथि	-	02.06.2026 दोपहर 3:00 बजे तक
4. तकनीकी निविदा खोलने की तिथि	-	02.06.2026 दोपहर 4.00 बजे
5. तकनीकी निविदा के भौतिक स्थल परीक्षण हेतु समयावधि दिनांक	-	05.06.2026
6. तकनीकी निविदा में सफल आवेदकों के चयन की तिथि	-	09.06.2026 शाम 03:00 बजे
7. वित्तीय निविदा खोलने की तिथि	-	12.06.2026 शाम 04:00 बजे

कलेक्टर
बलरामपुर-रामानुजगंज (छ.ग.)

जी.नं.-262700927/2

पीएचसी में डॉक्टर गायब लेकिन मानहानि नोटिस समय पर पहुंच गया!

बसदेई की खबर छपी तो इलाज नहीं...50 लाख का नोटिस शुरू हो गया !

अस्पताल पर सवाल पूछे तो पत्रकार पर 'कानूनी हमला'!

ग्रामीण स्वास्थ्य व्यवस्था पर खबर लिखना पड़ा भारी?

बसदेई अस्पताल की बदहाली पर रिपोर्ट,जवाब में 50 लाख की धमकी

जांच होनी थी अस्पताल की,शुरू हो गई पत्रकार की घेराबंदी

खबर हिंदी में छपी, जवाब अंग्रेज़ी के कानूनी बम से मिला

सवाल स्वास्थ्य व्यवस्था पर था,बना दिया गया 'अपराध केस'!

इयूटी रोस्टर पर सवाल उठे तो सिस्टम को मानहानि याद आ गई...

जनहित की खबर या 'गुनाह'? बसदेई पीएचसी विवाद में बड़ा सवाल

अस्पताल की अव्यवस्था उजागर हुई तो पत्रकार पर वसूली के आरोप!

ग्रामीण अस्पताल से लखनऊ तक,खबर के जवाब में कानूनी 'सर्जिकल स्ट्राइक'

बसदेई पीएचसी में मरीज रेफर,सवाल पूछने वाला पत्रकार 'टारगेट'

50 लाख का नोटिस और एक सवाल—खबर से इतनी घबराहट क्यों?

व्यवस्था पर सवाल उठा अब मानहानि की नई परिभाषा

-ओंकार पाण्डेय-

सूरजपुर,23 मई 2026 (घटती-घटना)।

सूरजपुर जिले के बसदेई प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र की व्यवस्था पर प्रकाशित खबरों ने आखिरकार वह कर दिखाया, जो शायद वर्षों से बीमार पड़ी सरकारी व्यवस्था नहीं कर पाई थी–पूरा सिस्टम अचानक जाग गया। फर्क सिर्फ इतना रहा कि मरीजों के इलाज,डॉक्टरों की उपस्थिति और अस्पताल की हालत पर नहीं,बल्कि खबर लिखने वाले पत्रकार पर कार्रवाई की ऊर्जा दिखाई दी।

दैनिक घटती-घटना में प्रकाशित खबरों में सवाल उठाया गया था कि आखिर बसदेई पीएचसी में एमबीबीएस डॉक्टर होने के बावजूद प्रभावहीन क्यों हैं? इयूटी रोस्टर सिर्फ कागजों तक सीमित क्यों दिखाई देता है? रात में मरीजों को डॉक्टर के बजाय रेफर की सुविधा क्यों मिलती है? और अस्पताल में आखिर व्यवस्था चला कौन रहा है? लेकिन इन सवालों के जवाब में स्वास्थ्य विभाग की जांच टीम नहीं पहुंची, अस्पताल का निरीक्षण नहीं हुआ। ग्रामीणों की शिकायतों का सत्यापन नहीं हुआ,बल्कि अचानक उत्तर प्रदेश के हाईकोर्ट के एक अधिवक्ता के माध्यम से अंग्रेज़ी में 50 लाख रुपये का कानूनी नोटिस पहुंच गया, ऐसा लगा मानो किसी ग्रामीण अस्पताल की खबर नहीं, बल्कि किसी अंतरराष्ट्रीय रक्षा सौदे का गोपनीय दस्तावेज लीक हो गया

बसदेई PHC की रातें भगवान भरोसे... पत्रकार की सुबह 50 लाख के नोटिस से!

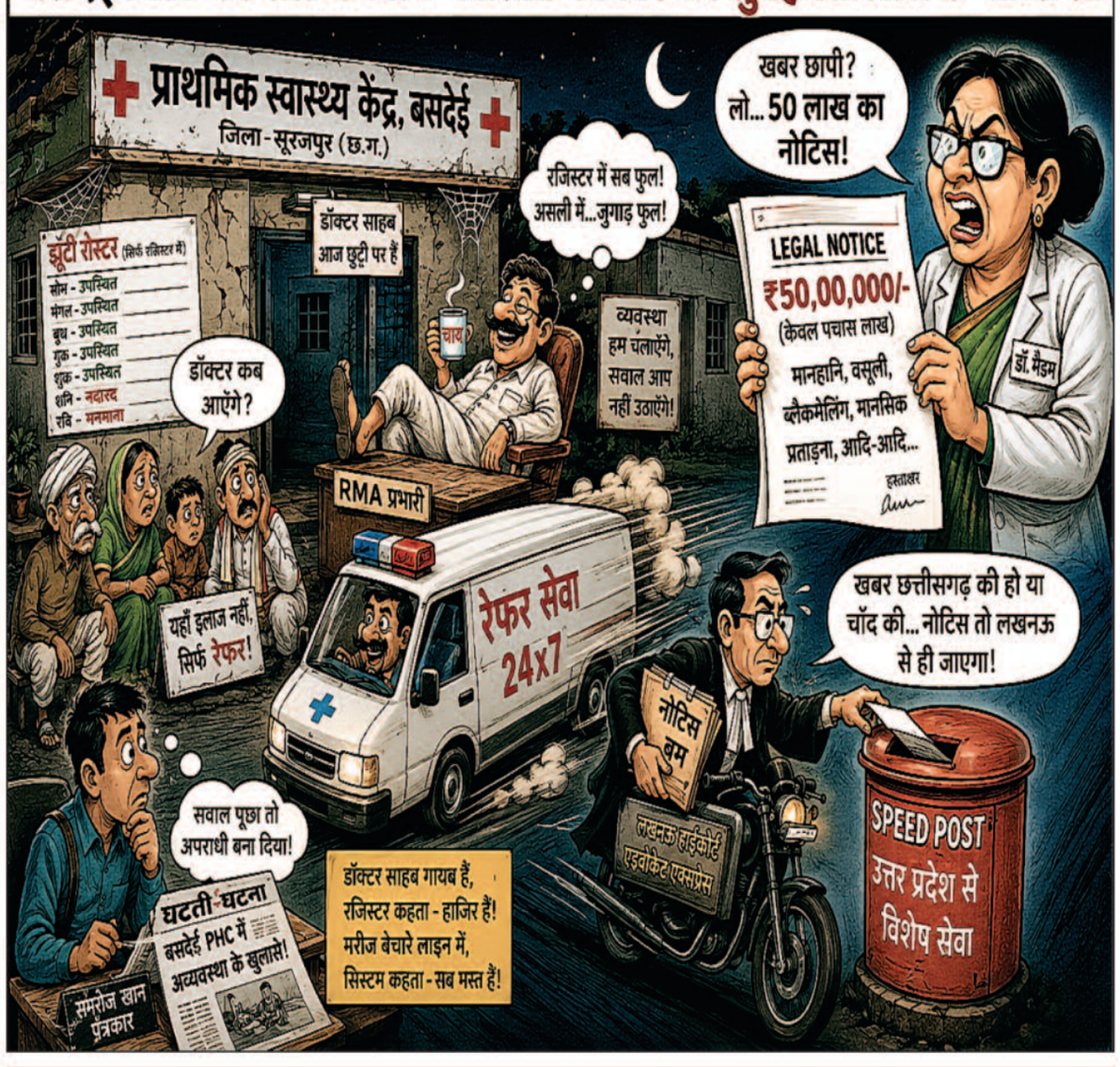

खबर में अस्पताल था,नोटिस में 'अपराध साम्राज्य' बना दिया गया...

पत्रकार समरोज खान द्वारा प्रकाशित खबरों का विषय साफ था–ग्रामीण स्वास्थ्य व्यवस्था, खबरों में यह बताया गया कि अस्पताल में एमबीबीएस डॉक्टर को जिम्मेदारी नहीं मिल रही, आरएमए प्रभुत्व की चर्चा है,मरीज परेशान हैं और रात में स्वास्थ्य सेवाएं भगवान भरोसे चल रही हैं, लेकिन जब नोटिस आया, तो उसमें आरोप ऐसे लगे मानो पत्रकारिता नहीं, किसी अपराध फिल्म की पटकथा लिखी गई हो, ब्लैकमेलिंग,वसूली,मानसिक प्रताड़ना, साइबर अपराध,आपराधिक धमकी–ऐसी धाराएं जोड़ दी गईं कि पढ़ने वाला एक बार को भूल जाए कि पूरा विवाद एक पीएचसी की खबरों से जुड़ा है, सबसे दिलचस्प दृश्य यह रहा कि हिंदी अखबार में छपी खबर का जवाब अंग्रेज़ी कानूनी नोटिस से दिया गया,ग्रामीण क्षेत्र के एक स्थानीय पत्रकार को इतनी भारी-भरकम अंग्रेज़ी कानूनी भाषा भेजी गई कि आधा डर शायद शब्दकोश देखकर ही पैदा हो जाए,मानो संदेश साफ था–खबर कम लिखो,वरना डिक्शनरी ज्यादा पढ़नी पड़ेगी।

जांच अस्पताल की होनी थी,शुरू पत्रकार की हो गई...

इस पूरे मामले में सबसे बड़ा व्यंग्य यही है कि जिन मुद्दों पर प्रशासनिक जांच होनी चाहिए थी,वही मुद्दे अब पीछे धकेल दिए गए,सवाल यह नहीं पूछा गया कि अस्पताल में रात के समय डॉक्टर उपलब्ध रहते हैं या नहीं,सवाल यह नहीं पूछा गया कि ग्रामीणों की शिकायतें झूठी हैं या सही,सवाल यह भी नहीं पूछा गया कि आखिर रेफर सस्कृति इतनी मजबूत क्यों है,पूरी ऊर्जा इस बात में लगती दिखाई दी कि खबर क्यों छपी,यानी मरीज लाइन में खड़ा रहे तो चलेगा,लेकिन खबर लाइन पार नहीं करनी चाहिए,ग्रामीणों के मुताबिक अस्पताल में कई बार डॉक्टरों की अनुपस्थिति,अव्यवस्था और इलाज के बजाय रेफर की शिकायतें पहले भी सामने आती रही हैं,लेकिन सरकारी तंत्र की कार्यशैली कुछ ऐसी हो चुकी है कि जब तक कोई खबर वायरल न हो जाए,तब तक फाइलों में सब संतोषजनक चलता रहता है, और जैसे ही अखबार में हेडिंग मोटी छप जाती है,अचानक व्यवस्था को अपनी प्रतिष्ठा याद आ जाती है।

50 लाख का सवालः आखिर डर किस बात का था?

यदि खबरें पूरी तरह गलत थीं,तो सबसे आसान रास्ता था तथ्य पेश करना,अस्पताल का इयूटी रजिस्टर सार्वजनिक किया जाता। निरीक्षण रिपोर्ट दिखाई जाती,संबंधित डॉक्टरों और अधिकारियों का आधिकारिक स्पष्टीकरण जारी होता,ग्रामीणों से बात होती,लेकिन यहां तो सीधा 50 लाख पर छलांग लगा दी गई,अब लोग व्यंग्य में पूछ रहे हैं कि बसदेई पीएचसी में इलाज मुफ्त है या नहीं,यह तो पता नहीं,लेकिन खबर लिखने की कीमत जरूर 50 लाख तय हो गई,यह रकम भी कम दिलचस्प नहीं है, ऐसा प्रतीत होता है मानो स्वास्थ्य विभाग ने अब मानहानि स्लैब तय कर दिया हो छोटी खबर पर चेतावनी,मध्यम खबर पर प्रेस नोट और बड़ी खबर पर 50 लाख का नोटिस।

पत्रकारिता अब सरकारी प्रशस्ति गान बने?

लोकतंत्र में पत्रकारिता का काम सिर्फ रिबन कटिंग और माल्यार्पण छापना नहीं होता,मीडिया का असली काम वही है जो असुविधाजनक सवाल पूछे। अस्पताल में डॉक्टर नहीं हैं तो सवाल होगा, स्कूल में शिक्षक नहीं हैं तो सवाल होगा, राशन नहीं मिल रहा तो सवाल होगा,लेकिन अब एक नई व्यवस्था विकसित होती दिखाई दे रही है समस्या बताओ मत...वरना समस्या तुम बन जाओगे,यही कारण है कि इस मामले ने स्थानीय पत्रकारों में चिंता पैदा कर दी है,क्योंकि यदि जनहित की खबरों पर इस तरह आपराधिक धाराओं और करोड़ों के नोटिस का इस्तेमाल होने लगे,तो छोटे शहरों और ग्रामीण इलाकों में स्वतंत्र पत्रकारिता धीरे-धीरे खत्म हो जाएगी।

अंग्रेज़ी नोटिस बनाम हिंदी ज़मीन की हकीकत

यह पूरा घटनाक्रम अपने आप में प्रतीकात्मक भी है,एक तरफ ग्रामीण क्षेत्र का अस्पताल...दूसरी तरफ स्थानीय हिंदी पत्रकार...और तीसरी तरफ उत्तर प्रदेश से आया अंग्रेज़ी कानूनी नोटिस, मानो बीमारी बसदेई में हुई और ऑपरेशन लखनऊ से शुरू हो गया,स्थानीय लोग अब मजाक में कह रहे हैं कि अस्पताल में डॉक्टर भले समय पर न मिलें, लेकिन कानूनी नोटिस की व्यवस्था अत्यंत आधुनिक और तत्पर है।

क्या खबरों में उठाए गए सवाल गलत थे?

प्रकाशित खबरों में जो बातें सामने आईं, वे पूरी तरह जनहित से जुड़ी थीं एमबीबीएस डॉक्टर को प्रभाव नहीं मिलना,आरएमए प्रभुत्व की चर्चा,इयूटी रोस्टर और वास्तविक उपस्थिति पर सवाल,रात में मरीजों की परेशानी,रेफर संस्कृति,ग्रामीण स्वास्थ्य सेवाओं की स्थिति इनमें से कौन सा मुद्दा निजी था? यदि किसी सरकारी अस्पताल की कार्यप्रणाली पर सवाल पूछना मानहानि है,तो फिर भविष्य में कोई पत्रकार स्वास्थ्य व्यवस्था पर खबर लिखने से पहले शायद वकील की सलाह लेकर ही निकलेगा।

जनहित अब सबसे असुविधाजनक शब्द बनता जा रहा है...

इस पूरे विवाद में सबसे ज्यादा गायब जो चीज दिखी,वह थी—जनहित,क्योंकि यदि वास्तव में जनहित प्राथमिकता होता, तो खबर छपने के बाद विभाग मौके पर पहुंचता,जांच बैठती, सुधारात्मक आदेश जारी होते,लेकिन यहां प्राथमिकता छवि प्रबंधन अधिक दिखाई दी,व्यवस्था की सबसे बड़ी विडंबना यही है कि कई बार अस्पताल की टूटी खिड़की से ज्यादा चिंता अखबार की हेडिंग से होने लगती है।

ग्रामीणों की आवाज आखिर सुनेगा कौन?

बसदेई जैसे ग्रामीण इलाकों में अखबार ही कई बार लोगों की आखिरी आवाज बनता है,वहां हर नागरिक सीधे राजधानी तक नहीं पहुंच सकता,न हर मरीज सोशल मीडिया अभियान चला सकता है,ऐसे में स्थानीय पत्रकार ही वह माध्यम बनते हैं जो छोटी जगहों की बड़ी समस्याएं सामने लाते हैं, यदि उन पर ही वसूली,ब्लैकमेलिंग और आपराधिक षड्यंत्र जैसे आरोपों की बौछार शुरू हो जाए,तो फिर ग्रामीण जनता की समस्याएं सरकारी फाइलों में दम तोड़ देंगी।

अब असली सवाल यही है...

प्रश्न : क्या खबर झूठी थी?

उत्तर : यदि हां,तो तथ्य पेश कीजिए।

प्रश्न : क्या अस्पताल की व्यवस्था आदर्श थी?

उत्तर : यदि हां,तो जांच कराइए।

प्रश्न : क्या मरीजों की शिकायतें मनगढ़ंत थीं?

उत्तर- यदि हां,तो ग्रामीणों के बयान सार्वजनिक कीजिए, लेकिन यदि हर सवाल का जवाब सिर्फ कानूनी धमकी होगा,तो फिर यह लोकतंत्र कम और इमेज मैनेजमेंट प्राइवेट लिमिटेड ज्यादा लगेगा।

अंत में...बसदेई पीएचसी का मामला अब सिर्फ एक अस्पताल की खबर नहीं रह गया है,यह उस मानसिकता का आईना बन गया है जहां सवाल पूछने वालों से ज्यादा सवाल छपने से डर पैदा होता है,लोकतंत्र में खबर का जवाब खबर से दिया जाता है...

तथ्य का जवाब तथ्य से दिया जाता है,जांच का जवाब जांच से दिया जाता है,लेकिन जब जवाब के नाम पर सीधे 50 लाख का नोटिस पहुंचे,तो जनता यही पूछती है...आखिर खबर में ऐसा क्या सच था,जिससे इतनी घबराहट के साथ आला अधिकारी के जानकारी के बगैर लखनऊ से नोटिस दिलवाने की जरूरत आन पड़ी...

सुशासन तिहार में भाजपा का घरेलू विस्फोट

सीएम के सामने विधायक पर बरसे अपने ही नेता

विधायक गायब,सचिव सक्रिय – सुशासन मंच पर फूटा भाजपा कार्यकर्ताओं का गुस्सा

मुख्यमंत्री के सामने खुली भाजपा की अंदरूनी लड़ाई, विधायक की निष्क्रियता पर उठा सवाल

सुशासन के मंच पर संगठन की बेचैनी, विधायक से ज्यादा चर्चा में निज सचिव

कुशहा में भाजपा का सियासी भूचाल,अपने ही कार्यकर्ताओं ने खोली विधायक की पोल

सीएम के दौरे में फूटा असंतोष,भाजपा नेता बोले – क्षेत्र में दिखती ही नहीं विधायक

घटती घटना | कोरिया-सूरजपुर-समाचार | अम्बिकापुर, बुधवार 16 जुलाई 2025 | 5

सत्ता और संगठन की लड़ाई सोशल मीडिया से सड़क पर आई,मण्डल पदाधिकारियों ने विधायक पीए के खिलाफ दिया धरना,नारेबाजी भी की...

मंदिर में मूर्ति स्थापना के दौरान विधायक के पीए पर मंडल पदाधिकारियों के खिलाफ जातिगत अपशब्द कहने का लगा आरोप

विधायक के पीए ने आरोपों का किया खंडन कहा मैंने किसी को कोई भी अपशब्द नहीं कहा

सोशल मीडिया पर भारी घमासान आरोपों के बीच धरना प्रदर्शन कल से लगातार जारी

जिला पंचायत सदस्य,जनपद अध्यक्ष सहित जनपद सदस्य भी हुए धरने में शामिल,धरने का किया समर्थन

मंडल पदाधिकारियों का आरोप मण्डल अध्यक्ष पर की गई टिप्पणी बर्दाश्त नहीं...

क्या था मामला

सुशासन तिहार बना शिकायत दरबार,भाजपा कार्यकर्ताओं ने अपनी ही विधायक को घेरा

दो साल की नाराजगी मंच पर फूटी,भाजपा में विधायक बनाम कार्यकर्ता की जंग तेज

मुख्यमंत्री के सामने भाजपा की किरकिरी, विधायक की अनुपस्थिति पर उठे तीखे सवाल

भाजपा में 'पीए राज' का आरोप,कार्यकर्ताओं ने विधायक से ज्यादा सचिव को घेरा

हमने उन्हें बोल दिया है – सीएम के जवाब ने बढ़ाई राजनीतिक हलचल

-रवि सिंह-

कोरिया,23 मई 2026 (घटती-घटना)। कोरिया जिले के सोनहत विकासखंड के ग्राम कुशहा में आयोजित सुशासन तिहार कार्यक्रम सरकार के लिए उपलब्धियों का मंच होना था, मुख्यमंत्री विष्णु देव साय जनता के बीच थे, अधिकारी फाइलों के साथ तैयार बैठे थे, योजनाओं के पोस्टर चमक रहे थे और मंच से सुशासन का संदेश दिया जा रहा था, लेकिन राजनीति अक्सर स्क्रिप्ट से नहीं चलती,कुशहा में भी वही हुआ,जनता की समस्याओं के लिए बनाए गए मंच पर भाजपा के अपने कार्यकर्ता ही अपनी विधायक रेणुका सिंह के खिलाफ मोर्चा खोल बैठे।

जो बात दो साल से सोशल मीडिया, व्हाट्सएप ग्रुप और बंद कमरों में धीरे-धीरे उबल रही थी,वह आखिरकार मुख्यमंत्री के सामने सार्वजनिक रूप से फूट पड़ी, भाजयुमो जिला महामंत्री मनोज साहू ने मंच से साफ शब्दों में कहा कि विधायक क्षेत्र में नहीं आतीं,कार्यकर्ता उपेक्षित हैं और जनता की सुनवाई नहीं हो रही,यह बयान केवल शिकायत नहीं था,बल्कि भाजपा संगठन के भीतर जमा असंतोष का सार्वजनिक विस्फोट था, सबसे दिलचस्प दृश्य यह रहा कि शिकायत होते समय वहां मौजूद जनता और भाजपा कार्यकर्ताओं में से किसी ने विरोध नहीं किया,राजनीति में कई बार तालियां नहीं, बल्कि खामोशी सबसे बड़ा संदेश देती है, कुशहा में वही खामोशी गूंज रही थी।

सुशासन के मंच पर अनुपस्थिति का सवाल

कार्यक्रम में मुख्यमंत्री मौजूद थे,अधिकारी मौजूद थे,पार्टी के स्थानीय नेता मौजूद थे,लेकिन जिस विधानसभा क्षेत्र में कार्यक्रम आयोजित था,उसकी विधायक अनुपस्थित थीं,यही अनुपस्थिति पूरे विवाद की धुरी बन गई,स्थानीय कार्यकर्ताओं का आरोप कोई नया नहीं है,चुनाव के बाद से लगातार यह चर्चा चलती रही है कि विधायक की क्षेत्रीय सक्रियता सीमित होती जा रही है,लोग कहते हैं कि क्षेत्र की जनता अपनी विधायक का इंतजार ज्यादा करती है और दर्शन कम होते हैं,गांवों में सड़क,बिजली,पानी और स्वास्थ्य की समस्याओं से ज्यादा चर्चा इस बात की होने लगी कि विधायक आखिर हैं कहां? मुख्यमंत्री ने मंच से स्थिति संभालने की कोशिश करते हुए कहा कि विधायक के परिवार में स्वास्थ्य संबंधी समस्या है,बाद में विधायक की ओर से अस्पताल में भर्ती बेटे की तस्वीर साझा कर सफाई भी दी गई,लेकिन राजनीति में समस्या केवल अनुपस्थिति नहीं होती,बल्कि वह धारणा होती है जो अनुपस्थिति पैदा करती है,और भरतपुर-सोनहत क्षेत्र में यह धारणा अब गहराई से बैठ चुकी है कि विधायक क्षेत्र से दूर होती जा रही हैं।

भाजपा में असली ताकत विधायक या उनका सुपर पीए?

इस पूरे घटनाक्रम का सबसे विस्फोटक हिस्सा विधायक के निज सचिव को लेकर उठ रही नाराजगी है, भाजपा कार्यकर्ताओं के बीच यह चर्चा अब खुलेआम होने लगी है कि विधायक से ज्यादा प्रभाव उनके निज सहायक का है,और यही भाजपा के भीतर सबसे बड़ी बेचैनी बन चुका है,राजनीतिक गलियारों में आरोप लगाए जा रहे हैं कि विधायक तक पहुंचने से पहले कार्यकर्ताओं को उनके दरबार से गुजरना पड़ता है, कार्यकर्ताओं का आरोप है कि सोशल मीडिया पर भड़काऊ पोस्ट डालना, संगठन के भीतर विरोधियों को निशाना बनाना, कार्यकर्ताओं से कठोर व्यवहार करना और खुद को सुपर पावर सेंटर की तरह प्रस्तुत करना अब आम बात हो गई है,भाजपा के पुराने कार्यकर्ता तंज कसते हुए कहते हैं कि अब राजनीति में जनता से ज्यादा महत्व मोबाइल और सोशल मीडिया का हो गया है,गांव का कार्यकर्ता घंटों इंतजार करता है, लेकिन फेसबुक पोस्ट पांच मिनट में पहुंच जाती है,यही कारण है कि भाजपा के भीतर अब यह सवाल तेजी से उठ रहा है कि संगठन आखिर चला कौन रहा है—विधायक,कार्यकर्ता या सोशल मीडिया संचालित निज सचिव?

सोशल मीडिया की राजनीति ने संगठन को दो हिस्सों में बांटा

दो साल से सोशल मीडिया पर चल रही खींचतान अब सड़क और मंच तक पहुंच चुकी है, विधायक समर्थक और विरोधी गुटों के बीच पोस्ट,टिप्पणियां और कटाक्ष लगातार बढ़ते रहे,आरोप यह भी लगे कि सोशल मीडिया का इस्तेमाल संगठन को मजबूत करने के बजाय विरोधियों को डराने और अपमानित करने में हो रहा है,राजनीतिक पर्यवेक्षकों का मानना है कि भाजपा के भीतर यह संघर्ष वैचारिक कम और एक्सेस पॉलिटिक्स ज्यादा बन चुका है,जो विधायक तक पहुंच रखता है,वही ताकतवर माना जाता है,बाकी कार्यकर्ता केवल पोस्टर लगाने और भीड़ जुटाने तक सीमित हो जाते हैं,यही कारण है कि कुशहा में मनोज साहू की शिकायत केवल व्यक्तिगत गुस्सा नहीं थी,वह उन कार्यकर्ताओं की सामूहिक नाराजगी थी जो खुद को धीरे-धीरे संगठन से कटता महसूस कर रहे हैं।

कारण बताओ नोटिस और बड़ा सवाल

घटना के बाद भाजपा जिलाध्यक्ष की ओर से मनोज साहू को कारण बताओ नोटिस जारी कर दिया गया,संगठन ने अनुशासन बनाए रखने का संकेत दिया,लेकिन इसके साथ ही एक बड़ा सवाल भी खड़ा हो गया, यदि मंच से शिकायत करना अनुशासनहीनता है,तो उन परिस्थितियों पर कार्रवाई कौन करेगा जिनकी वजह से शिकायत पैदा हुई? यदि कार्यकर्ताओं को उपेक्षित महसूस हो रहा है,यदि संगठन में संवाद खत्म हो रहा है, यदि सोशल मीडिया पर लगातार अपमानजनक माहौल बन रहा है,तो उसकी जिम्मेदारी तय कौन करेगा? राजनीतिक गलियारों में अब यही चर्चा है कि भाजपा समस्या उठाने वालों पर कार्रवाई करेगी या समस्या पैदा करने वालों पर भी नजर डालेगी।

मुख्यमंत्री का जवाब और राजनीति की भाषा

मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय का जवाब—हमने उन्हें बोल दिया है—अब पूरे क्षेत्र में राजनीतिक व्याख्याओं का विषय बन गया है, कुछ लोग इसे मुख्यमंत्री की सहज शैली मान रहे हैं,जबकि कुछ इसे अंदरूनी असंतोष को शांत करने का प्रयास बता रहे हैं,लेकिन राजनीति में शब्दों से ज्यादा महत्वपूर्ण वह माहौल होता है जिसमें शब्द बोले जाते हैं, कुशहा के मंच पर माहौल साफ बता रहा था कि भाजपा के भीतर सब कुछ सामान्य नहीं है,मुख्यमंत्री शायद कार्यक्रम को विवाद से बचाना चाहते थे, लेकिन जिस तरीके से शिकायत सार्वजनिक हुई, उसने यह संकेत जरूर दे दिया कि संगठन के भीतर संवाद की कमी अब गंभीर रूप ले रही है।

जनता की चुप्पी ने बढ़ाई भाजपा की चिंता

राजनीति में विरोध से ज्यादा खतरनाक मौन माना जाता है,कुशहा में यही मौन भाजपा की चिंता बढ़ा रहा है,जब विधायक की अनुपस्थिति और निष्क्रियता की शिकायत हुई,तब जनता ने न विरोध किया, न समर्थन में शोर मचाया,लेकिन वहां मौजूद लोगों के चेहरे यह बता रहे थे कि शिकायत उन्हें अस्वाभाविक नहीं लगी,यही वह बिंदु है जहां मामला केवल संगठनात्मक नहीं रह जाता,बल्कि राजनीतिक जोखिम में बदल जाता है,क्योंकि जनता यदि शिकायत को सही मानने लगे,तो विपक्ष को मुद्दा खोजने की जरूरत नहीं पड़ती।

विपक्ष के हाथ लगा तैयार हथियार

भाजपा के इस अंदरूनी विवाद ने विपक्ष को बैठे-बिठाए बड़ा मुद्दा दे दिया है,विपक्ष अब तंज कस रहा है कि जब भाजपा के अपने कार्यकर्ता ही विधायक से परेशान हैं,तो आम जनता की स्थिति का अंदाजा लगाया जा सकता है,राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि यदि यही स्थिति बनी रही,तो आने वाले चुनावों में भरतपुर-सोनहत सीट भाजपा के लिए चुनौती बन सकती है,क्षेत्र में यह चर्चा भी शुरू हो चुकी है कि वर्तमान परिस्थितियां पूर्व विधायक के लिए राजनीतिक जमीन तैयार कर रही हैं।

सुशासन तिहार से निकला सबसे बड़ा राजनीतिक संदेश

कुशहा की घटना ने एक बेहद महत्वपूर्ण सवाल खड़ा कर दिया है क्या सुशासन केवल अधिकारियों की समीक्षा तक सीमित रहेगा,या जनता और कार्यकर्ताओं की राजनीतिक शिकायतें भी सुनी जाएंगी? यदि मुख्यमंत्री गांव-गांव जाकर विभागीय समीक्षा ले सकते हैं,तो क्या वे अपनी पार्टी के विधायकों की कार्यशैली पर कार्यकर्ताओं का फीडबैक नहीं सुन सकते? आखिर लोकतंत्र में सबसे पहले जनता और कार्यकर्ता ही राजनीतिक रिपोर्ट कार्ड तैयार करते हैं।

भाजपा के सामने सबसे कठिन चुनौती–अपनों की नाराजगी...

राजनीति में विपक्ष से लड़ना आसान होता है,लेकिन अपने कार्यकर्ताओं की नाराजगी संभालना सबसे मुश्किल काम होता है,भरतपुर-सोनहत क्षेत्र में भाजपा फिलहाल इसी संकट से गुजरती दिखाई दे रही है,एक तरफ विधायक की अनुपस्थिति को लेकर बढ़ती चर्चा है,दूसरी तरफ उनके निज सचिव को लेकर नाराजगी का स्तर इतना बढ़ चुका है कि अब लोग खुले मंच पर बोलने लगे हैं,संगठन अनुशासन बनाए रखने की कोशिश कर रहा है,लेकिन सवाल यह है कि क्या केवल नोटिस देकर नाराजगी खत्म हो जाएगी? क्योंकि क्षेत्र में अब एक व्यंग्यात्मक टिप्पणी तेजी से फैल रही है विधायक का दर्शन दुर्लभ है,लेकिन उनके निज सचिव का प्रभाव सर्वव्यापी है, और राजनीति में जब व्यंग्य जनता की भाषा बन जाए, तो समझ लेना चाहिए कि असंतोष अब केवल चर्चा नहीं रहा,बल्कि जनधारणा बन चुका है।

कारण बताओ नोटिस युवा को, लेकिन सवालों के घेरे में कौन?

घटना के बाद भाजपा जिलाध्यक्ष देवेन्द्र तिवारी की ओर से मनोज साहू को कारण बताओ नोटिस जारी कर दिया गया, संगठन ने अनुशासन बनाए रखने का संकेत दिया, लेकिन इसके साथ ही एक बड़ा सवाल भी खड़ा हो गया, यदि मंच से शिकायत करना अनुशासनहीनता है, तो उन परिस्थितियों पर कार्रवाई कौन करेगा जिनकी वजह से शिकायत पैदा हुई? यदि कार्यकर्ताओं को उपेक्षित महसूस हो रहा है, यदि संगठन में संवाद खत्म हो रहा है, यदि सोशल मीडिया पर लगातार अपमानजनक माहौल बन रहा है, तो उसकी जिम्मेदारी तय कौन करेगा? राजनीतिक गलियारों में अब यही चर्चा है कि भाजपा समस्या उठाने वालों पर कार्रवाई करेगी या समस्या पैदा करने वालों पर भी नजर डालेगी, कार्यकर्ताओं के बीच यह चर्चा तेजी से फैल रही है कि यदि मुख्यमंत्री के सामने विधायक की निष्क्रियता की बात कहना अनुशासनहीनता है, तो सोशल मीडिया पर लगातार विवाद पैदा करने वालों पर कार्रवाई क्यों नहीं होती? मनोज शुक्ला को कारण बताओ नोटिस कौन देगा? विधायक और जनता के बीच बढ़ती दूरी के लिए जिम्मेदारी किसकी तय होगी? संगठन के भीतर गुटबाजी बढ़ाने के आरोपों की जांच कौन करेगा? यही वे सवाल हैं जो अब भाजपा संगठन के भीतर धीरे-धीरे और तीखे होते जा रहे हैं।

कपूर खानदान का वो बेटा जो बना सिनेमा का सबसे बड़ा खलनायक

9 साल तक नहीं मिला काम,रणबीर के परदादा की दास्तां...

कपूर खानदान का एक बेटा ऐसा भी था, जिसने हीरो नहीं बल्कि खलनायक बनकर सिनेमा में राज किया। एक्टर का सोनाली बेंद्रे से भी कनेक्शन है। कपूर खानदान के सदस्यों ने फिल्मी दुनिया पर राज किया है और कुछ आज भी अपने अभिनय का सिक्का चला रहे हैं। पृथ्वीराज कपूर से लेकर राज,ऋषि,शम्मी और रणबीर तक...कपूर खानदान ने सिनेमा में अमिट छाप छोड़ी है। ज्यादातर हीरो बनकर छा गए। मगर क्या आपको पता है कि कपूर खानदान का एक और बेटा जिसकी सिनेमा पर सालों तक हुकूमत रही,लेकिन खलनायक के रूप में। जी हां, कपूर खानदान का एक चिराग फिल्मों में खलनायक बनकर धमाल मचाता रहा। यह खलनायक कोई और नहीं बल्कि अभिनेता कमल कपूर हैं।

सैकड़ों फिल्मों में बने थे खलनायक

कमल कपूर ने 50 सालों तक सिनेमा में अपने अभिनय से दर्शकों का दिल जीता है। वह करीब 500 फिल्मों में खलनायक बने। उन्हें सबसे ज्यादा पहचान मिली अमिताभ बच्चन स्टारर डॉन में नारंग की भूमिका निभाकर। उन्होंने कई बड़ी फिल्मों राज, दीवाना,राजा और रंक, पाकीजा,दीवार,अमर अकबर एंथनी,मर्द,तूफान,दाता,जैसी कई बड़ी फिल्मों में काम किया। उनकी पहली फिल्म दूर

चलें थी, जबकि उन्हें लास्ट बार आखिरी संघर्ष फिल्म में देखा गया था। सैकड़ों फिल्मों में काम करने वाले कमल कपूर ने अभिनय से खूब दिल जीता,लेकिन वैसा स्टारडम नहीं मिला जिसके वह हकदार थे।

9 साल तक काम के लिए तरसे थे...

एक दौर था, जब उन्हें 9 साल तक काम नहीं मिला था। यह 40 दशक की बात है। वह बतौर हीरो अपना करियर चमकाने की मशक्कत कर रहे थे, लेकिन एक के बाद एक फ्लॉप फिल्मों के बाद उन्हें पहचान नहीं मिल रही थी। तभी उन्हें 1965 में आई फिल्म जौहर महमूद इन गोवा में खलनायक की भूमिका मिली जिसने उनका डूबता करियर बचा लिया था।

पृथ्वीराज के थे भाई

लाहौर में जन्मे और डीएव्ही कॉलेज से पढ़ाई करने वाले कमल कपूर के बारे में कम लोग जानते हैं कि वह रिश्ते में राज कपूर के दादा लगते थे। जी हां, वह पृथ्वीराज कपूर के कजिन थे। कमल की मां और पृथ्वीराज की मां दोनों बहनें थीं। वह रिश्ते में रणबीर कपूर के परदादा लगते हैं। सिर्फ कपूर फैमिली ही नहीं, कमल का सोनाली बेंद्रे से भी रिश्ता है। वह सोनाली के नाना ससुर लगते हैं। दरअसल, कमल, सोनाली के पति गोल्डी बहल के नाना हैं।

अनुषा दांडेकर ने करण कुंद्रा-तेजस्वी प्रकाश नोट पर सफाई दी...

शेयर किया नया 'दयालुता दुःख देने वाला' पोस्ट

अनुषा दांडेकर, जो करण कुंद्रा की एक्स-गर्लफ्रेंड भी हैं,ने हाल ही में सोशल मीडिया पर एक क्रिप्टिक पोस्ट शेयर करके सुर्खियां बटोरीं। बाद में उन्होंने साफ किया कि पोस्ट का उन लोगों से कोई लेना-देना नहीं था जिनके बारे में सब सोच रहे थे कि यह करण और तेजस्वी प्रकाश के बारे में है। सफाई पोस्ट करने के बाद,अनुषा ने एक बार फिर सोशल मीडिया पर एक और पोस्ट शेयर किया, जिसमें बताया गया था कि उनकी दयालुता अक्सर उन्हें कैसे दुख पहुंचाती है।

अनुषा ने एक महिला की पोस्ट को फिर से शेयर किया, जिसमें लिखा था, मुझे पता है कि मेरी दयालुता मुझे दुख पहुंचाती है, लेकिन मैं इसे चुनती रहूंगी। पोस्ट में आगे कहा गया था, इसलिए नहीं कि मैं भोली हूं, बल्कि इसलिए कि मेरे काम मुझे बताते हैं। उन्होंने यह पोस्ट यह साफ करने के तुरंत बाद शेयर किया कि उनका पिछला क्रिप्टिक नोट करण और तेजस्वी के लिए नहीं था। अपनी सफाई में, अनुषा ने लिखा,हे भगवान,साफ है कि आप नहीं जानते,खासकर आर्टिकल्स! जब मैं किसी खास चीज़ के बारे में बात करती हूं, तो मैं ऐसा कहती हूं, अगर मैं अपने कारणों से भगवान के बारे में सोच रही हूं,तो भी आप इसे उसी के बारे में बनाते हैं और फिर अपनी सोच के लिए मुझ पर हमला करते हैं! सच में नहीं! उन्होंने हल्के-फुल्के अंदाज़ में नोट खत्म किया, जिसमें बताया कि उनके DMs प्यारे मैसेज से भरे हुए थे और वह उन सभी से सहमत थीं। अपने फॉलोअर्स को चिढ़ाते हुए उन्होंने कहा,हर कोई यह नहीं मान सकता कि तुमने मुझे क्या लिखा, लव यू। करण कुंद्रा के अपने रियलिटी शो में तेजस्वी प्रकाश को प्रपोज़ करने के तुरंत बाद, सोशल मीडिया यूज़र्स ने करण की एक्स-गर्लफ्रेंड अनुषा दांडेकर के शेयर किए गए एक क्रिप्टिक पोस्ट के बारे में अंदाज़ा लगाना शुरू कर दिया। उनके पोस्ट की टाइमिंग ने ध्यान खींचा क्योंकि उन्होंने इंस्टाग्राम स्टोरीज़ पर लिखा,मैं भगवान का शुक्रिया अदा कर रही हूँ!

12 साल पहले रिलीज हुई फिल्म जिसने 2 न्यूकमर्स को बना दिया बॉलीवुड स्टार

आज से ठीक 12 साल पहले एक फिल्म रिलीज हुई थी जिसमें 2 न्यूकमर्स ने डेब्यू किया था। ये फिल्म रिलीज होते ही कमाल करने में सफल रही थी और दोनों लीड एक्टर्स को स्टार बना गई थी। ये दोनों लीड एक्टर्स आज बॉलीवुड के सुपरहिट स्टार्स बन गए हैं। खास बात ये है कि इस फिल्म और इस जोड़ी को लोग आज तक नहीं भूले नहीं हैं। ये फिल्म कोई और नहीं बल्कि हीरोपंती थी जो साल 2014 में रिलीज हुई थी। आज इस फिल्म ने 12 साल पूरे कर लिए हैं।

2014 में रिलीज़ हुई हीरोपंती को टाइगर श्रॉफ के लिए एक बड़े लॉन्च के तौर पर पेश किया गया था। यह फिल्म एक्शन,स्टाइल और हीरो वाले पलों पर आधारित थी, जिनका मकसद बॉलीवुड के एक नए तरह के एक्शन स्टार को पेश करना था। टाइगर अपने हाई-एनर्जी स्टंट्स,शानदार डांस मूव्स और उस समय के आम डेब्यू कलाकारों से बिल्कुल अलग स्क्रीन प्रेजेंस के साथ आए। दूसरी ओर, कृति सैनन ने इंडस्ट्री में एक सौम्य और सहज अंदाज में प्रवेश किया। उन्हें न तो एक्शन स्टार के रूप में और न ही एक दमदार परफॉर्मर के रूप में पेश किया गया। इसके बजाय, वह स्क्रीन पर ताजा,स्वाभाविक और देखने में आसान लगीं, जिसने उन्हें उस फिल्म में अलग पहचान बनाने में मदद की जो अन्यथा बहुत शोरगुल वाली और स्टाइलिश थी। फिल्म कमाई के मामले में भी सुपरहिट रही थी। हीरोपंती के बाद, टाइगर श्रॉफ ने बॉलीवुड में बहुत जल्द ही अपनी एक अलग पहचान बना ली और वो पहचान थी एक्शन। उन्होंने धीरे-धीरे इसे नहीं अपनाया, बल्कि शुरुआत से ही इसे पूरी तरह से स्वीकार कर लिया। उनका अगला बड़ा कदम 2016 में आई फिल्म बागी के साथ आया, जिसने उन्हें एक पूर्ण एक्शन स्टार के रूप में स्थापित कर दिया और उनकी शारीरिक क्षमताओं पर आधारित एक सफल फ्रैंचाइजी को जन्म दिया। पिछले कुछ वर्षों में,टाइगर अपने कलाबाजी भरे फाइट सीक्वेंस,फ्लिप,किक और शारीरिक अनुशासन के लिए जाने जाने लगे, जिसने उन्हें उनके समकालीन कई अभिनेताओं से अलग पहचान दिलाई। आज दोनों डेब्यू एक्टर्स का सिक्का चलता है और बॉलीवुड के बड़े स्टार्स में गिने जाते हैं।

खूबसूरती में दी ऐश्वर्या राय को टक्कर,जड़ा था शाह रुख खान को थप्पड़,कहां गुमनाम हुईं ये मासूम हीरोइन?

90 के दशक में बॉलीवुड में कदम रखते ही छा जाने वाली और खूबसूरती में ऐश्वर्या राय को टक्कर देने वाली ये हसीना आज इंडस्ट्री में गायब हो चुकी हैं। 90 के दशक में फिल्म इंडस्ट्री में एक ऐसी हसीना आई थी,जिन्होंने आते ही स्क्रीन पर अपनी खूबसूरती से सभी के दिलों की धड़कने बढ़ा दी थी। जिनकी आवाज से लेकर आंखों तक में मासूमियत झलकती थी। इस खूबसूरत हसीना को इंडस्ट्री में लेकर आए थे सदी के महानायक अमिताभ बच्चन। 90 के दशक में अपने गुड लुक्स से ऐश्वर्या राय को टक्कर देने वाली और सबके सामने सेट पर शाह रुख जैसे सुपरस्टार को थप्पड़ जड़ने वाली कौन थीं वह हसीना, जो आज हो चुकी हैं गुमनाम, आपको बताते हैं।

अमिताभ बच्चन की फिल्म से की थी एक्टिंग करियर की शुरुआत

जिस एक्ट्रेस का जिक्र हम अपने इस लेख में कर रहे हैं, वह कोई और नहीं, बल्कि 90 के दशक की मशहूर अभिनेत्री प्रिया गिल हैं,जो फिल्मी दुनिया में कदम रखते ही ओवरनाइट सेंसेशन बन गई थीं। प्रिया ने साल 1996 में अरशद वारसी और चंद्रचूड़ के अपोजिट फिल्म तेरे मेरे सपने से एक्टिंग की दुनिया में कदम रखा था। यह फिल्म अमिताभ बच्चन के प्रोडक्शन हाउस में बनी थी। पहली ही फिल्म से प्रिया ने अपने चार्म से लोगो का ध्यान खींच लिया था। हालांकि, वह एक बेहतरीन अदाकारा हैं,इस बात को लोगों ने सिर्फ तुम में नोटिस किया था, जिसमें एक्ट्रेस ने एक सीधी-सादी ले की का किरदार निभाया था। सिर्फ तुम में संजय कपूर और प्रिया की केमिस्ट्री को काफी पसंद किया था गया। इस फिल्म के गाने, स्टोरी लाइन और प्रिया की मासूमियत ने उन्हें 90 और 2000 के दशक की एक बे ी हीरोइन बनने में काफी मदद की।

ऐश्वर्या राय से कैसे शुरू हुई थी तुलना?

सिर्फ तुम के बाद प्रिया गिल को शाह रुख खान के अपोजिट फिल्म जोश ऑफर हुई, जिसमें ऐश्वर्या राय ने किंग की बहन का किरदार अदा किया तह। इस फिल्म में प्रिया की अपीरियंस ने आग में घी का काम किया और लोगों ने खूबसूरती में उनकी तुलना ऐश्वर्या राय से करनी शुरू कर दी। इस फिल्म में प्रिया को शाह रुख खान की गर्लफ्रेंड के रूप में कास्ट किया गया था। एक बार प्रिया ने सेट पर किंग खान को जोरदार तमाचा मार दिया था, जिसके बारे में उन्होंने खुद बताया था।

शाह रुख खान ने बोली थी ये बात

प्रिया ने लहरे टीवी को दिए गए एक इंटरव्यू में बताया था कि जोश के एक गाने में उन्हें शाह रुख को थप्पड़ मारना था,लेकिन वह ऐसा करने से बहुत ही घबरा रही थीं। निर्देशक मंसूर उन्हें बार-बार कह रहे थे कि ऐसे मारों जैसे गर्लफ्रेंड गुस्सा होती है, लेकिन एक्ट्रेस की हिम्मत नहीं हो रही थी। वह ओके बोल रही थी। उधर शाह रुख ने भी प्रिया को कहा मुझे मारो जिसके बाद उन्होंने किंग खान को इतना जोरदार तमाचा जड़ दिया कि पूरा सेट साइलेंट हो गया था।

साल 2006 में इंडस्ट्री को कह दिया था अलविदा

प्रिया को जहां करियर की शुरुआत अच्छी हुई, तो वहीं एक समय ऐसा भी आया कि बड़ी एक्ट्रेस होने के बावजूद वह एक हिट के लिए तरस गई, जिसका असर उनके करियर पर पे ने लगा। लगातार फिल्मों की फेलियर के बाद साल 2006 में प्रिया ने एक्टिंग की दुनिया को अलविदा कह दिया और खुद को लाइमलाइट से बिल्कुल दूर कर लिया। दो दशक तक उन्होंने खुद को लाइमलाइट से बिल्कुल दूर रखा और अपनी प्राइवेट लाइफ जी।

कौन हैं मानसी पवार? कान 2026 के रेड कार्पेट पर दिखाया किलर अंदाज,डेब्यू लुक से बटोर रहीं सुर्खियां

कान फेस्टिवल 2026 अपने चरम पर है और बीते 12 मई से लगातार दुनियाभर के तमाम सेलिब्रिटी रेड कार्पेट पर अपना बेस्ट लुक फ्लॉन्ट कर रहे हैं। आलिया भट्ट से लेकर ऐश्वर्या राय बच्चन जैसी हस्तियां अपने लुक से फैंस का दिन बना चुकी हैं। वहीं एहसास चन्ना से लेकर मौनी रॉय, अदिति राव हैदरी, उर्वशी रौतेला, डायना पेंटी ने भी रेड कार्पेट पर जलवा बिखेरा। अब एक्ट्रेस मानसी पवार के रेड कार्पेट लुक की भी काफी चर्चा है। मानसी ने इसी साल अपना कान डेब्यू किया है, जहां उन्होंने अपने एक नहीं बल्कि दो-दो लुक फ्लॉन्ट किए और दोनों लुक्स से फैंस को हैरान कर दिया। अब मानसी पवार के लुक की हर तरफ चर्चा हो रही है और लोग उनकी खूबसूरती और फैशन सेंस की तारीफ करते नहीं थक रहे। मानसी पवार की बात करें तो वह मशहूर टीवी एक्ट्रेस हैं और साथ ही साथ कई म्यूजिक वीडियोज से भी फैंस का दिल जीत चुकी हैं। 2020 में न तेरे बिन आए को लेकर वह काफी चर्चा में थीं और अब अपने कान डेब्यू को लेकर सुर्खियों में हैं। मानसी पवार ने रेड कार्पेट पर ट्रांसपेरेंट ब्लैक गाउन और पाउडर पिंक गाउन में शिरकत की। पहले लुक की बात करें तो एक्ट्रेस ने खूबसूरत कस्टम डिजाइन ब्लैक गाउन पहना था, जिसमें क्लासिक एलीगेंस और मॉडर्न एज का का शानदार कॉम्बिनेशन था। इस स्ट्रैपलेस गाउन पर बारीक मिडनाइट-ब्लैक एम्ब्रॉयडरी और चमकदार बीडवर्क किया गया था, जो इसकी खूबसूरती को और बढ़ा रहा था। अपने लुक को एक्ट्रेस ने ब्लैक क्लच, डायंड ब्रेसलेट और ईयररिंग्स के साथ कम्प्लीट किया।

खेल समाचार

आईसीसी ला रहा है ये 3 नए नियम

मैच के बीच मैदान पर हेड कोच की एंट्री को लेकर बड़ा फैसला...

आईसीसी क्रिकेट नियमों में बड़े बदलाव करने जा रहा है...अब हेड कोच को ड्रिंक्स ब्रेक में मैदान पर जाने की अनुमति मिल सकती है...इसके अलावा,टी 20 आई में इनिंग्स ब्रेक 15 मिनट करने और संदिग्ध बॉलिंग एक्शन के लिए हॉक-आई तकनीक लाने का प्रस्ताव है...

दुबई,23 मई 2026। आईसीसी क्रिकेट को और अधिक रोमांचक, पारदर्शी और रणनीतिक बनाने के लिए खेल के मौजूदा नियमों में कुछ क्रांतिकारी बदलाव करने पर विचार कर रही है। आईसीसी की आगामी बैठक और चर्चाओं में जिन प्रस्तावों पर सबसे ज्यादा ध्यान दिया जा रहा है, उनमें सबसे बड़ा बदलाव टीमों के हेड कोच की भूमिका को लेकर है। नए संशोधनों के तहत अब मैच के दौरान हेड कोच को सीधे मैदान के भीतर जाने की अनुमति मिल सकती है। आईसीसी द्वारा प्रस्तावित ये तीन बड़े नियम खेल के तीनों फॉर्मेट (टेस्ट, वनडे और टी20) की सूरत बदल सकते हैं। आइए इन नए नियमों के बारे में आपको पूरी जानकारी देते हैं।

ड्रिंक्स ब्रेक में सीधे मैदान पर जा सकेंगे हेड कोच

वर्तमान नियमों के मुताबिक, मैच

के दौरान केवल सबस्टीट्यूट खिलाड़ी ही ड्रिंक्स या अन्य सामान लेकर मैदान के भीतर जा सकते हैं। लेकिन आईसीसी के नए प्रस्ताव के अनुसार, अब टीमो के मुख्य कोच को ड्रिंक्स ब्रेक के दौरान मैदान पर जाकर अपने खिलाड़ियों से सीधे बातचीत करने की अनुमति दी जा सकती है। हालांकि कोच अभी भी बाउंड्री लाइन या डगआउट से खिलाड़ियों को रणनीतिक संदेश भेजते हैं, लेकिन मैदान के अंदर जाने की अनुमति मिलने से वे कप्तान और प्रमुख खिलाड़ियों से सीधे लाइव मैच की रणनीति पर चर्चा कर सकेंगे।

वनडे फॉर्मेट पर दिखेगा असर

यह नियम खासकर वनडे फॉर्मेट को ध्यान में रखकर लाया जा रहा है, जहां हर पारी में करीब 70-70 मिनट के अंतराल पर दो ड्रिंक्स ब्रेक होते हैं। नियम बदलने पर कोच को दोनों ब्रेक में मैदान पर जाने का एक्सेस मिलेगा। हालांकि, अभी यह पूरी तरह साफ नहीं है कि मैदान पर जाने के लिए हेड कोच को टीम की जर्सी पहननी होगी या नहीं। मौजूदा नियम कहता है कि मैदान पर ड्रिंक्स ले जाने वाले किसी भी खिलाड़ी का उचित क्रिकेट पोशाक में होना अनिवार्य है।

टी 20 आई में कम होगा इनिंग्स ब्रेक का समय

आईसीसी टी20 इंटरनेशनल मैचों की गति को और तेज करने तथा खेल को तय समय सीमा के भीतर खत्म करने के लिए प्रतिबद्ध है। इसी कड़ी में आईसीसी टी20 मैचों के दौरान होने वाले इनिंग्स ब्रेक को घटाकर सिर्फ 15 मिनट करने की योजना बना रही है। इस नियम के लागू होने से दर्शकों को बिना किसी लंबे इंतजार के दूसरी पारी का रोमांच देखने को मिलेगा। इससे खेल और भी ज्यादा रोमांचक हो जाएगा।

संदिग्ध बॉलिंग एक्शन को पकड़ने के लिए हॉक-आई तकनीक

क्रिकेट में अक्सर किसी गेंदबाज के संदिग्ध या अवैध बॉलिंग एक्शन को लेकर विवाद खड़ा हो जाता है, जिसकी जांच मैच के कई दिनों बाद आईसीसी की लैब में होती है। लेकिन अब आईसीसी इसे मैच के दौरान ही ट्रैक करने की तैयारी में है। नए नियमों के तहत अंपायरों को लाइव मैच के दौरान ही किसी खिलाड़ी के बॉलिंग एक्शन की वैधता की जांच करने के लिए हॉक-आई तकनीक का उपयोग करने का अधिकार दिया जा सकता है। इससे अगर कोई गेंदबाज अपनी कोहनी को तय नियम यानी कि 15 डिग्री से ज्यादा मोड़ रहा होगा, तो अंपायर मैदान पर ही तकनीक की मदद से तुरंत फैसला ले सकेंगे, जिससे खेल में पारदर्शिता और बढ़ेगी।

विनेश फोगाट को ट्रायल में शामिल होने की मंजूरी

दिल्ली,23 मई 2026। दिल्ली हाई कोर्ट ने भारतीय पहलवान विनेश फोगाट को आगामी एशियन गेम्स 2026 के ट्रायल्स में हिस्सा लेने की अनुमति दे दी है। अदालत ने इस मामले में सुनवाई करते हुए ट्रायल प्रक्रिया को पारदर्शी बनाने के लिए कई अहम निर्देश जारी किए हैं। कोर्ट के इस फैसले को खेल जगत में महत्वपूर्ण माना जा रहा है। अदालत ने आदेश दिया है कि ट्रायल्स की पूरी प्रक्रिया की वीडियो रिकॉर्डिंग की जाए और यह कार्य एक स्वतंत्र पैनल की निगरानी में किया जाए। इस पैनल में भारतीय खेल प्राधिकरण और भारतीय ओलंपिक संघ के दो ऑब्ज़र्वर शामिल होंगे, ताकि चयन प्रक्रिया पूरी तरह निष्पक्ष और पारदर्शी बनी रहे। मामले की सुनवाई के दौरान कोर्ट ने कुश्ती की राष्ट्रीय संस्था भारतीय कुश्ती महासंघ के रवैये पर भी कड़ी टिप्पणी की। अदालत ने कहा कि मौजूदा परिस्थितियों में संगठन का व्यवहार ÷बदले की भावना से प्रेरित÷ प्रतीत होता है। कोर्ट ने यह भी संकेत दिया कि चयन प्रक्रिया में निष्पक्षता और पारदर्शिता बनाए रखना बेहद जरूरी है, ताकि किसी भी खिलाड़ी के साथ अन्याय न हो। यह मामला उस विवाद से जुड़ा है जिसमें विनेश फोगाट को ट्रायल्स में भाग लेने से रोके जाने पर सवाल उठे थे। उनके वकीलों ने अदालत में दलील दी थी कि चयन प्रक्रिया में पारदर्शिता नहीं बरती जा रही है और खिलाड़ियों के अधिकारों को प्रभावित किया जा रहा है। इसके बाद दिल्ली हाई कोर्ट ने हस्तक्षेप करते हुए ट्रायल में भाग लेने की अनुमति दी।

ब्रूनो फर्नांडीस बने प्रीमियर लीग प्लेयर ऑफ द सीजन

मैनचेस्टर,23 मई 2026। मैनचेस्टर यूनाइटेड के स्टार मिडफील्डर ब्रूनो फर्नांडीस को शनिवार को प्रीमियर लीग प्लेयर ऑफ द सीजन चुना गया। उनके शानदार प्रदर्शन के दम पर उन्हें यह प्रतिष्ठित सम्मान मिला है। इस सीजन में फर्नांडीस ने न सिर्फ अपनी टीम के लिए अहम योगदान दिया, बल्कि लीग में लगातार बेहतरीन खेल दिखाकर सभी का ध्यान अपनी ओर खींचा। ब्रूनो फर्नांडीस ने इस सीजन में 20 असिस्ट देकर प्रीमियर लीग के एक बड़े रिकॉर्ड की बराबरी की है। इसके साथ ही उन्होंने आठ गोल भी किए, जिससे मैनचेस्टर यूनाइटेड के आक्रमण को मजबूती मिली। उनकी रचनात्मकता, पासिंग और मैच के निर्णायक पलों में प्रभावी प्रदर्शन ने टीम की सफलता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनके प्रदर्शन की बदौलत मैनचेस्टर यूनाइटेड ने लीग में तीसरा स्थान हासिल किया और आगामी चैंपियंस लीग के लिए क्वालीफिकेशन सुनिश्चित किया। सीजन भर फर्नांडीस टीम के मिडफील्ड का

मुख्य आधार बने रहे और कई महत्वपूर्ण मुकाबलों में निर्णायक भूमिका निभाई। कोचिंग स्टाफ और क्लब प्रबंधन ने भी उनके प्रदर्शन की सराहना की है। टीम के लिए लगातार मौके बनाना और दबाव की स्थिति में भी शांत रहकर खेल को नियंत्रित करना उनकी सबसे बड़ी ताकतों में से एक रहा।

आईसीसी टी 20 वर्ल्ड कप 2026 से पहले भारतीय महिला टीम इंग्लैंड दौरे के लिए रवाना

मुंबई,23 मई 2026। इंडियन विमेंस टीम को छत्रपति शिवाजी महाराज इंटरनेशनल एयरपोर्ट पर देखा गया, जब वे इंग्लैंड टूर के लिए यूनाइटेड किंगडम के लिए रवाना हुईं। इसके बाद वे आईसीसी विमेंस टी 20 वर्ल्ड कप में हिस्सा लेंगी, जिसे इंग्लैंड एंड वेल्स क्रिकेट बोर्ड 12 जून से होस्ट करेगा। बोर्ड ऑफ़ कंट्रोल फॉर क्रिकेट इन इंडिया ने इस महीने की शुरुआत में, 2 मई को अपने हेडक्वार्टर में एक प्रेस कॉन्फ्रेंस के ज़रिए टीम की घोषणा की थी। प्रेस मीट को कप्तान हरमनप्रीत कौर, चीफ सिलेक्टर अमिता शर्मा और सेक्रेटरी देवजीत सैकिया ने संबोधित किया। मीडिया से बात करने से पहले, विमेंस सिलेक्शन कमिटी ने टीम को फाइनल करने के लिए एक मीटिंग की, जिसमें हरमनप्रीत और हेड कोच अमोल मजूमदार भी मौजूद थे।

संक्षिप्त समाचार

भारतीय सेना भर्ती 2027 की ऑनलाइन परीक्षा 1 जून से...

रायपुर,23 मई 2026। भारतीय सेना में भर्ती होकर देश सेवा का सपना देख रहे युवाओं के लिए महत्वपूर्ण सूचना है। सेना भर्ती वर्ष 2027 के लिए आयोजित होने वाली ऑनलाइन कॉमन एंट्रेंस एग्जाम की तिथियों की घोषणा कर दी गई है। परीक्षा का आयोजन 1 जून से 12 जून 2026 तक किया जाएगा। विभिन्न श्रेणियों के अभ्यर्थियों के लिए यह परीक्षा दो चरणों में संपन्न होगी। पहला चरण 1 से 5 जून तथा दूसरा चरण 8 से 12 जून तक आयोजित किया जाएगा। अभ्यर्थियों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए छत्तीसगढ़ में भिलाई, दुर्ग, रायपुर, बिलासपुर और जगदलपुर सहित पांच प्रमुख शहरों में कुल 10 परीक्षा केंद्र बनाए गए हैं। इन केंद्रों पर प्रतिदिन तीन से चार शिफ्टों में परीक्षा आयोजित की जाएगी, ताकि सभी उम्मीदवारों की परीक्षा सुचारू रूप से संपन्न हो सके। सेना भर्ती कार्यालय की ओर से बताया गया है कि परीक्षा एवं भर्ती प्रक्रिया से संबंधित किसी भी जानकारी या समस्या के समाधान के लिए अभ्यर्थी नया रायपुर स्थित अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट स्टेडियम के समीप संचालित सेना भर्ती कार्यालय से संपर्क कर सकते हैं। इसके लिए दूरभाष नंबर 0771-2965212 और 0771-2965214 जारी किए गए हैं।

कोर्ट के आदेश पर लोगों की सेवा करने निकला युवक,ट्रैफिक नियम का किया था उल्लंघन

जांजगीर,23 मई 2026। शराब पीकर बाइक चलाने वाले एक युवक को अदालत ने ऐसी सजा सुनाई है, जिसकी जिलेभर में चर्चा हो रही है। न्यायिक मजिस्ट्रेट कोर्ट ने युवक पर 15 हजार रुपये का जुर्माना लगाने के साथ-साथ 15 दिनों तक सामुदायिक सेवा करने का आदेश भी दिया है। अदालत के निर्देश के अनुसार आरोपी युवक अब शहर के प्रमुख चौक-चौराहों और सार्वजनिक स्थानों पर लोगों को शराब पीकर वाहन न चलाने के लिए जागरुक करेगा। उसे ट्रैफिक नियमों के पालन और सड़क सुरक्षा का संदेश देना होगा, कोर्ट के इस फैसले को लोगों में जागरुकता बढ़ाने की दिशा में एक अलग पहल माना जा रहा है। जानकारी के मुताबिक यह पहली बार नहीं था जब युवक को इस तरह पकड़ा गया हो, इससे पहले भी शराब पीकर वाहन चलाने के मामले में उस पर 10 हजार रुपये का जुर्माना लगाया जा चुका था। जांजगीर में शराब पीकर वाहन चलाने के मामलों में आमतौर पर जुर्माना या कानूनी कार्रवाई की जाती है, लेकिन इस बार कोर्ट ने सामुदायिक सेवा को सजा का हिस्सा बनाकर नया संदेश देने की कोशिश की है।

एयरपोर्ट में मृत इलेक्ट्रीशियन की पत्नी को हर महीने मिलेंगे 22 हजार रुपये...

रायपुर,23 मई 2026। रायपुर एयरपोर्ट पर फाल्स सीलिंग की मरम्मत के दौरान हुए हादसे में जान गंवाने वाले कर्मचारी कुबेर चंद्र साहू के परिवार को आर्थिक सहायता देने की घोषणा की गई है। शुक्रवार को ठेकेदार विनीत शाह ने बताया कि मृतक की पत्नी को पति की सेवानिवृत्ति आयु 60 वर्ष तक हर महीने 22 हजार रुपये दिए जाएंगे। वर्तमान में कुबेर चंद्र साहू की उम्र 32 वर्ष थी। इस आधार पर आगामी 28 वर्षों तक यह राशि उनके परिवार को उपलब्ध कराई जाएगी। जानकारी के अनुसार, कुबेर चंद्र साहू पिछले आठ-नौ महीनों से कार्यरत थे। पीएफ और इंश्योरेंस कटौती के बाद उन्हें प्रतिमाह लगभग 22 हजार रुपये वेतन मिलता था। ठेकेदार की ओर से कहा गया है कि परिवार को पीएफ और इंश्योरेंस का लाभ भी मिलेगा। इसके अलावा भविष्य में पीएफ से मिलने वाली पेंशन की सुविधा भी प्रदान की जाएगी। गौरतलब है कि गुरुवार को एयरपोर्ट के प्रथम तल पर फाल्स सीलिंग रिपेयरिंग का कार्य चल रहा था।

मोदी सरकार का युवाओं को बड़ा तोहफा : रेलवे विभागों में मिलीं नौकरियां

रायपुर रेल मंडल में आयोजित 19वें रोजगार मेले में 257 युवाओं को सौंपे गए नियुक्ति पत्र

पीएम मोदी ने वर्चुअली किया संबोधित

रायपुर,23 मई 2026। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से देशभर के 51,000 अभ्यर्थियों को संबोधित करते हुए रोजगार मेला के 19वें चरण का देशव्यापी शुभारंभ किया। इसी कड़ी में दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे के रायपुर रेल मंडल द्वारा आयोजित भव्य समारोह में विभिन्न केंद्रीय मंत्रालयों और विभागों के लिए चयनित कुल 257 नवनियुक्त युवाओं को सीधे नियुक्ति पत्र सौंपे गए। यह आयोजन छत्तीसगढ़ के युवाओं के लिए बेहद खास है क्योंकि लंबे समय से सरकारी नौकरी की तैयारी कर रहे स्थानीय युवाओं को रेलवे, डाक और बैंकिंग जैसे प्रमुख क्षेत्रों में सीधे नियुक्तियां मिली हैं। इस कदम से राज्य में बेरोजगारी कम करने और युवाओं को आत्मनिर्भर बनाकर मुख्यधारा से जोड़ने में बड़ी मदद मिलेगी, जिससे स्थानीय स्तर पर आर्थिक संपन्नता बढ़ेगी। नवा रायपुर और रायपुर के युवाओं के लिए यह ऐतिहासिक पल साइंस कॉलेज मैदान के पास स्थित पंडित दीनदयाल उपाध्याय ऑडिटोरियम में आया। इस गरिमामयी समारोह में केंद्रीय जनजातीय कार्य राज्य मंत्री श्री दुर्गादास उइके मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुए। उनके साथ छत्तीसगढ़ से राज्यसभा सांसद श्रीमती लक्ष्मी वर्मा, मंडल रेल प्रबंधक श्री दयानंद, अपर मंडल रेल प्रबंधक श्री बजरंग अग्रवाल और वरिष्ठ मंडल कार्मिक अधिकारी राहुल गर्ग सहित कई आला अधिकारी उपस्थित रहे। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि ने युवाओं को संबोधित करते हुए कहा कि ये नियुक्तियां राष्ट्र निर्माण और आत्मनिर्भर भारत के सपने को पूरा करने में मील का पत्थर साबित होंगी। रायपुर रेल मंडल में कुल आवंटित 803 पदों में से 257 अभ्यर्थियों को फिजिकल रूप से बुलाकर मंच पर सम्मान के साथ जॉइनिंग लेटर दिए गए, जिससे उनके और उनके परिवारों के चेहरे खिल उठे।

विभागवार नियुक्तियां : रायपुर में बांटे गए नियुक्ति पत्रों में अकेले रेलवे विभाग के 200, पोस्टल विभाग के 34, बैंक ऑफ बड़ौदा (वित्त) के 11, स्वास्थ्य मंत्रालय के 7 और हिंदुस्तान कॉपर लिमिटेड के 5 अभ्यर्थी शामिल हैं। देशव्यापी और स्थानीय आंकड़ाः जहां एक तरफ प्रधानमंत्री ने देश स्तर पर 51,000 युवाओं को नई भूमिका की बधाई दी, वहीं रायपुर केंद्र में कुल 803 चयनितों में से 257 को व्यक्तिगत तौर पर लेटर सौंपे गए।

नियुक्ति पत्र प्राप्त करने के बाद ये सभी नवनियुक्त अभ्यर्थी जल्द ही अपने-अपने संबंधित विभागों में कार्यभार संभालेंगे। केंद्र सरकार के निर्देशानुसार, आने वाले महीनों में रोजगार मेले के अगले चरणों के माध्यम से छत्तीसगढ़ के अन्य जिलों के युवाओं को भी केंद्र और राज्य के विभिन्न उपक्रमों में रोजगार के नए अवसर दिए जाएंगे।

धर्मांतरित परिवारों की डी-लिस्टिंग की मांग को लेकर बस्तर से 1200 आदिवासी दिल्ली रवाना

जगदलपुर,23 मई 2026। धर्मांतरण के बाद आरक्षण लाभ प्राप्त कर रहे परिवारों को अनुसूचित जनजाति सूची से बाहर करने की मांग को लेकर बस्तर संभाग से बड़ी संख्या में आदिवासी ग्रामीण दिल्ली के लिए रवाना हुए हैं। सर्व आदिवासी समाज के नेतृत्व में बस्तर संभाग के सातों जिलों से करीब 1200 ग्रामीण राष्ट्रीय राजधानी पहुंचे हैं, जहां वे 24 मई को राष्ट्रपति के नाम ज्ञापन सौंपकर डी-लिस्टिंग की मांग उठाएंगे। सर्व आदिवासी समाज के प्रमुख एवं पूर्व केंद्रीय मंत्री अरविंद नेताम ने बताया कि यह अभियान देशव्यापी स्तर पर चलाया जा रहा है। उनके अनुसार विभिन्न राज्यों से बड़ी संख्या में आदिवासी समुदाय के लोग इस आंदोलन में भाग ले रहे हैं। आंदोलन का मुख्य उद्देश्य धर्म परिवर्तन कर चुके परिवारों को अनुसूचित जनजाति वर्ग के लिए निर्धारित आरक्षण और अन्य संवैधानिक सुविधाओं से अलग करने की मांग को प्रमुखता से उठाना है। अरविंद नेताम ने आरोप लगाया कि कई क्षेत्रों में लोगों को विभिन्न प्रकार के प्रलोभन देकर धर्मांतरण कराया जा रहा है। उन्होंने यह भी कहा कि कई स्थानों पर अवैध रूप से धार्मिक गतिविधियों का संचालन किए जाने की शिकायतें मिल रही हैं। ऐसे मामलों पर रोक लगाने और आदिवासी समाज की मूल पहचान एवं अधिकारों की रक्षा के लिए डी-लिस्टिंग को आवश्यक बताया जा रहा है। स्वास्थ्य कारणों से अरविंद नेताम स्वयं दिल्ली में आयोजित कार्यक्रम में शामिल नहीं हो पाएंगे, लेकिन उन्होंने राष्ट्रपति को पत्र भेजकर इस विषय पर आवश्यक कार्रवाई करने का अनुरोध किया है। गौरतलब है कि धर्मांतरण और डी-लिस्टिंग का मुद्दा पिछले कुछ समय से विभिन्न आदिवासी संगठनों के बीच चर्चा का विषय बना हुआ है। राष्ट्रपति को सौंपे जाने वाले ज्ञापन के माध्यम से आंदोलनकारी अपनी मांगों को केंद्र सरकार तक पहुंचाने का प्रयास करेंगे।

रायपुर में पेट्रोल 105.19 रुपए लीटर,डीजल भी महंगा

पेट्रोल 87 पैसे और डीजल के 91 पैसे बढ़े दाम

रायपुर,23 मई 2026। रायपुर में पेट्रोल और डीजल की कीमतों में शनिवार को फिर बढ़ोतरी हो गई है। तेल कंपनियों ने फ्यूल के दाम करीब 90 पैसे प्रति लीटर बढ़ा दिए हैं। इससे पहले 15 मई और 19 मई को भी पेट्रोल-डीजल के दाम 3-3 रुपए और 90-90 पैसे प्रति लीटर बढ़ाए गए थे। यानी सिर्फ 9 दिनों के भीतर तीसरी बार कीमतें बढ़ने से आम लोगों की जेब पर सीधा असर पड़ा है। रायपुर में अब पेट्रोल की कीमत करीब 105.19 रुपए प्रति लीटर पहुंच गई है, जबकि डीजल करीब 98.29 रुपए प्रति लीटर बिक रहा है। सरगुजा में पेट्रोल 106.52 रुपए और डीजल 99.68 रुपए बिक रहा। बिलासपुर में पेट्रोल 106.05 और डीजल 99.16 रुपए प्रति लीटर हो गया है। डीजल महंगा होने का असर सिर्फ वाहनों तक सीमित नहीं रहेगा। ट्रकों और मालवाहक वाहनों का खर्च बढ़ने से दूसरे राज्यों से आने वाली सब्जियां, फल, राशन और अन्य जरूरी सामान महंगे हो सकते हैं। इसके अलावा खेती-किसानी में इस्तेमाल होने वाले ट्रैक्टर और पंपिंग सेट चलाने की लागत भी बढ़ेगी। वहीं बस, ऑटो और स्कूल वाहनों के किराए में भी आने वाले दिनों में इजाफा देखने को मिल सकता है। इससे पहले कीमतों में बढ़ोतरी और सप्लाई को लेकर फैली अफवाहों के बीच कई पेट्रोल पंपों पर वाहनों की लंबी कतारें लग गई थीं। रायपुर समेत

प्रदेश के कई शहरों में लोग जरूरत से ज्यादा पेट्रोल-डीजल भरवाते नजर आए थे। कुछ स्थानों पर पंप बंद होने जैसी स्थिति भी बन गई थी, जिससे लोगों की परेशानी बढ़ गई थी। हालांकि, अब स्थिति सामान्य है। ईंधन संकट और बढ़ती कीमतों के बीच प्रशासन भी अलर्ट मोड पर है। रायपुर कलेक्टर ने पेट्रोल-डीजल की ब्लैक मार्केटिंग रोकने के लिए हेल्पलाइन नंबर जारी किए हैं।

अकेले पड़े दीपक बैज,टीएस के खिलाफ नहीं महंत और बघेल

रायपुर,23 मई 2026। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष दीपक बैज का कार्यकाल 10 जून को खत्म हो रहा है। बैज को दोबारा मौका मिलेगा या नहीं, इसको लेकर संशय है। इन सबके बीच पूर्व डिप्टी सीएम टीएस सिंहदेव ने प्रदेश का दौरा शुरू कर दिया है। सिंहदेव के दौरे से बैज बेचैन हैं और हमलावर भी। जैसे-जैसे प्रदेश अध्यक्ष दीपक बैज के कार्यकाल खत्म होने की तारीख नजदीक आ रही है, पीसीसी में हलचल मची है। शुक्रवार को बैज ने पूर्व डिप्टी सीएम टीएस सिंहदेव पर सीधे हमला बोला और उन्हें दिल्ली की राजनीति करने की सलाह दे दी। बात यहीं खत्म नहीं हुई। उन्होंने अपने बयान को पार्टी की आधिकारिक फेसबुक अकाऊंट पर शेयर किया। इसके बाद से पार्टी में खलबली मची है। दरअसल,टीएस सिंहदेव ने कुछ समय पहले पीसीसी की कमान संभालने की इच्छा जताई थी, जिससे बैज नाखुश हैं। हालांकि देर शाम सिंहदेव की बैज से चर्चा हुई। सूत्रों के मुताबिक बैज ने अपनी तरफ से सफाई दी। सिंहदेव ने भी बैज को सीएम बनने की संभावना जताकर विवाद का पटाक्षेप करने की कोशिश की है। मगर अध्यक्ष की नियुक्ति को लेकर विवाद थमने के आसार नहीं हैं। पार्टी सूत्रों के मुताबिक सिंहदेव पर हमले से पहले बैज ने पूर्व सीएम भूपेश बघेल से उनके आवास पर जाकर मुलाकात की थी। मीडिया से चर्चा के बाद में वे नेता प्रतिपक्ष डॉ. चरणदास महंत से भी मिलने गए। बैज की डॉ. महंत से करीब घंटे भर चर्चा हुई। महंत भी बैज के बयान से नाखुश बताए जाते हैं। मगर महंत और पूर्व सीएम भूपेश बघेल ने फिलहाल चुप्पी साध रखी है। दोनों की नजरें पार्टी हाईकमान पर टिकीं हुई है। बताया गया है कि प्रदेश प्रभारी सचिन पायलट ने पिछले दौरे में कई सीनियर नेताओं से मुलाकात की थी और उनसे सामान्य कामकाज को लेकर चर्चा की थी। कुछ जिला अध्यक्ष दीपक बैज की कार्यप्रणाली से नाखुश हैं। उन्होंने प्रदेश प्रभारी से बैज की शिकायत भी की थी। दूसरी तरफ, महासमुंद, रायगढ़ और बालोद,कांकेर जिले के दौरे के बाद पूर्व डिप्टी सीएम टीएस सिंहदेव बस्तर दौरे का कार्यक्रम बन रहा है। वो रविवार को कोरबा में मछुआ सम्मेलन में रहेंगे,इसमें महंत के साथ बैज भी रहेंगे। गौर करने लायक बात ये है कि सिंहदेव की करीब दो महीने पहले दिल्ली में पार्टी के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष राहुल गांधी से अकेले में घंटे भर चर्चा हुई थी। चर्चा है कि हाईकमान के कुछ संकेतों के बाद ही सिंहदेव प्रदेश का दौरा कर रहे हैं। इससे बैज असहज बताए जाते हैं। बैज को लेकर यह कहा जा रहा है कि तीन साल के कार्यकाल में उपलब्धियां शून्य रही हैं।

कांग्रेस ने उठाए अवैध शराब,खाद संकट और ईंधन मूल्य वृद्धि के मुद्दे,सरकार से मांगा जवाब

रायपुर,23 मई 2026। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष दीपक बैज ने शनिवार को पत्रकारों से चर्चा करते हुए राज्य में अवैध शराब की बिक्री, किसानों के लिए उर्वरकों की उपलब्धता और पेट्रोल-डीजल की बढ़ती कीमतों को लेकर राज्य एवं केंद्र सरकार पर सवाल उठाए। उन्होंने विभिन्न मुद्दों पर सरकार से स्थिति स्पष्ट करने और आवश्यक कदम उठाने की मांग की। दीपक बैज ने कहा कि प्रदेश के कई क्षेत्रों में अवैध शराब की बिक्री की शिकायतें सामने आ रही हैं। उन्होंने कहा कि हाल के दिनों में सत्ता पक्ष के कुछ जनप्रतिनिधियों द्वारा भी सार्वजनिक मंचों पर इस विषय का उल्लेख किया गया है। बैज ने आरोप लगाया कि बाजार में बिना होलोग्राम और कथित नकली शराब की बिक्री की शिकायतें मिल रही हैं, जिसकी निष्पक्ष जांच होनी चाहिए। उन्होंने संबंधित एजेंसियों से मामले की जांच कराने की मांग की। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष ने खरीफ सीजन को देखते हुए किसानों के लिए पर्याप्त मात्रा में खाद उपलब्ध कराने की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि सरकार को उर्वरकों की मांग और उपलब्धता की स्थिति सार्वजनिक करनी चाहिए। कांग्रेस ने मांग की कि राज्य सरकार इस वर्ष के लिए अनुमानित आवश्यकता,उपलब्ध भंडारण और वितरण व्यवस्था की जानकारी देते हुए श्वेत पत्र जारी करे,ताकि किसानों को समय पर खाद उपलब्ध हो सके। बैज ने पेट्रोल और डीजल की कीमतों में हालिया बढ़ोतरी को लेकर भी चिंता व्यक्त की। उन्होंने कहा कि बीते दिनों में ईंधन के दामों में लगातार वृद्धि हुई है, जिसका असर आम लोगों और परिवहन लागत पर पड़ रहा है।

छत्तीसगढ़ के कोरबा में मिला 80 साल पुराना ब्रिटिशकालीन दस्तावेज

कोरबा,23 मई 2026। छत्तीसगढ़ के कोरबा जिले में 'ज्ञानभारतम' राष्ट्रीय पाण्डुलिपि सर्वेक्षण अभियान के दौरान एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक उपलब्धि सामने आई है। इस कड़ी में जिला समन्वयक सतीश प्रकाश सिंह ने पोड़ीउपरोड़ा ब्लॉक के ग्राम तुमान में सर्वेक्षण के दौरान ब्रिटिश कालीन दस्तावेजों को खोज निकाला। जिला समन्वयक सतीश प्रकाश सिंह ने आज बताया कि ग्राम तुमान के निवासी बुजुर्ग बिधून दास महंत के नाती ने सर्वेक्षण के दौरान उन्हें यह ब्रिटिश कालीन दस्तावेज उपलब्ध कराया। देश की आज़ादी के पहले के इस पुराने दस्तावेज का अवलोकन करने पर पाया गया कि एक रूपये मूल्य के स्टाम्प में ब्रिटेन के तत्कालीन राजा की तस्वीर छपी हुई है। यह हस्तलिखित दस्तावेज 80 साल पुराना हैं, जिसकी स्याही बहुत धुंधली हो चुकी है तथा कागज़ बहुत जीर्ण-शीर्ण हालात में हैं। दस्तावेज का अवलोकन करने के उपरांत 'ज्ञानभारतम् मिशन' के जिला समन्वयक ने बिधून दास महंत के परिजनों को तथा उपस्थित ग्रामवासियों को पुराने दस्तावेजों को संभाल कर सुरक्षित रखने की सलाह दी।

छत्तीसगढ़ राज्य लोक सेवा आयोग की मुख्य परीक्षा पर अभ्यर्थियों की याचिका...सप्ताह भर में परिणाम आने पर इंटरव्यू-पोस्टिंग रोकने की मांग...हाईकोर्ट ने आयोग से मांगा जवाब

बिलासपुर,23 मई 2026। छत्तीसगढ़ राज्य लोक सेवा आयोग की परीक्षा एक बार फिर विवादों में घिर गई है। अभ्यर्थियों ने मुख्य परीक्षा के मूल्यांकन,केवल सात दिनों में परिणाम जारी करने और चयन प्रक्रिया की पारदर्शिता पर गंभीर सवाल उठाए हैं। मामला अब हाई कोर्ट पहुंच चुका है, जहां आयोग से स्पष्ट जवाब तलब किया गया है।

मूल्यांकन और तेजी से घोषित परिणाम संदेहास्पद

19 अप्रैल 2026 को छत्तीसगढ़ राज्य लोक सेवा आयोग की कोर्ट कमिश्नर मुख्य परीक्षा आयोजित हुई थी। अभ्यर्थियों का आरोप है कि मात्र सप्ताह भर में परिणाम जारी करना मूल्यांकन की विश्वसनीयता पर सवाल खड़ा करता है। शिकायतों के बावजूद आयोग के अधिकारियों ने आपत्तियों पर कोई ध्यान नहीं दिया। कई केंद्रों में सुरक्षा जांच और ड्रेस कोड का पालन असमान रहा। और याचिका पर जस्टिस एन.के. व्यास की वेकेशन कोर्ट में सुनवाई हुई। सुनवाई के दौरान कोर्ट ने संतोषजनक जवाब न मिलने पर छत्तीसगढ़ राज्य लोक सेवा आयोग को नोटिस जारी करते हुए विस्तृत स्पष्टीकरण मांगा है। अगली सुनवाई की तारीख 5 अगस्त 2026 तय की गई है। याचिकाकर्ताओं की ओर से अधिवक्ता सुमित सिंह राठौर और दीपा श्रीवास ने पैरवी की।

इंटरव्यू और पोस्टिंग रोकने की मांग

याचिकाकर्ता अभ्यर्थियों ने कहा कि चयन प्रक्रिया में गंभीर अनियमितताएँ हैं। अधिवक्ताओं ने कोर्ट को बताया कि, चयनित अभ्यर्थियों के इंटरव्यू 21 मई को निर्धारित हैं। इसके तुरंत बाद पोस्टिंग प्रक्रिया शुरू होगी। उन्होंने मांग की कि जांच पूरी होने तक इंटरव्यू और पोस्टिंग रोक दी जाए।

कांग्रेस नेता के बेटे की हत्या...3 गिरफ्तार : पैसों का विवाद-रंजिश बनी वजह घर में घुसकर सिर-सीने में मारी थी गोली,मास्टरमाइंड अभी भी फरार...

जांजगीर-चांपा,23 मई 2026। छत्तीसगढ़ के जांजगीर-चांपा जिले में कांग्रेस नेता के बेटे की गोली मारकर हत्या के मामले में पुलिस ने तीन आरोपियों को गिरफ्तार किया है। पुलिस का कहना है कि करीब एक महीने पहले ग्राम करही में हुए इस वारदात के पीछे पैसों का विवाद, कारोबार की होड़ और पुरानी रंजिश मुख्य वजह बताई जा रही है। इस मामले में गिरफ्तार किए गए आरोपियों में हेमंत कुमार बघेल,भूषण बघेल और अमित टंडन शामिल हैं। ये तीनों करही गांव के ही रहने वाले हैं। पुलिस ने इनके पास से वारदात में इस्तेमाल की गई एक पिस्टल, उसकी मैगजीन,एक खाली मैगजीन और एक मोटरसाइकिल भी बरामद की है।

फिलहाल, मामले में मुख्य साजिशकर्ता और अन्य सहयोगियों की तलाश जारी है। मामला बिर्रा थाना क्षेत्र के करही गांव का है। दरअसल,यह घटना सीमेंट-रेत व्यवसायी और पूर्व ब्लॉक कांग्रेस उपाध्यक्ष सम्मेलाल कश्यप के घर की है। 23-24 अप्रैल की रात करीब साढ़े 12 बजे तीन नकाबपोश बदमाश घर में घुसे और परिवार के सदस्यों को निशाना बनाते हुए गोलीबारी शुरू कर दी। हमले के दौरान उनके बड़े बेटे आयुष कश्यप (19) को सिर और सीने में गोलियां लगी, जिससे उसकी मौके पर ही मौत हो गई। जबकि छोटा बेटा गंभीर घायल हो गया। बदमाशों ने वारदात से पहले पीड़ित भाइयों के माता-पिता को कमरे में बंद कर दिया था। वे घर से 50-60 रुपये कैश और एक आईफोन लूटकर मौके से फरार हो गए। घायल नाबालिग का जिला अस्पताल में इलाज जारी है। पुलिस ने शव का पोस्टमॉर्टम कर शव परिजनों को सौंप दिया है। मृतक आयुष कश्यप (19) बीएएलएलबी सेकंड ईयर का छात्र था,वहीं आशुतोष कश्यप (16) 10वीं का छात्र है। वह बिलासपुर में रहकर पढ़ाई करता है। उसकी एक बहन प्रेरणा कश्यप भी है जो कि जगदलपुर जिले के अंजर गांव पोस्ट ऑफिस में बीपीएम पद पर पोस्टेड है।

प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार 2026 के लिए आवेदन शुरू

रायपुर,23 मई 2026। बच्चों की प्रतिभा,साहस और उल्लेखनीय उपलब्धियों को राष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित करने के लिए प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार-2026 हेतु नामांकन प्रक्रिया शुरू कर दी गई है। महिला एवं बाल विकास विभाग ने पात्र बच्चों,अभिभावकों और संस्थाओं से निर्धारित समय सीमा के भीतर आवेदन करने की अपील की है। विभागीय अधिकारियों के अनुसार इस प्रतिष्ठित पुरस्कार के लिए 31 जुलाई 2026 तक ऑनलाइन नामांकन किए जा सकेंगे। यह पुरस्कार प्रतिवर्ष भारत के राष्ट्रपति द्वारा उन बच्चों को प्रदान किया जाता है, जिन्होंने विभिन्न क्षेत्रों में असाधारण उपलब्धियां हासिल कर समाज और देश के लिए प्रेरणादायी कार्य किए हैं। पुरस्कार के लिए 5 से 18 वर्ष आयु वर्ग के बच्चे पात्र होंगे। वीरता, सामाजिक सेवा, पर्यावरण संरक्षण, खेल,कला एवं संस्कृति तथा विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी सहित विभिन्न श्रेणियों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले बच्चों का चयन किया जाएगा। महिला एवं बाल विकास विभाग ने बताया कि योग्य बच्चों का नामांकन उनके अभिभावक, शैक्षणिक संस्थान, सामाजिक संगठन या अन्य व्यक्ति भी कर सकते हैं।

प्रकाशक,मुद्रक,स्वामी अविनाश कुमार सिंह के द्वारा साईं ऑफ्सेट प्रिंटर्स,नमनाकला,संत हरकेवल विद्यापीठ के पास,अम्बिकापुर से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक-अविनाश कुमार सिंह* (पी.आर.बी.कानून के अनुसार संपूर्ण संपादकीय दायित्व के लिए जिम्मेदार)
RNI Reg.No.CHHHIN/2004/15050,डॉक रजिस्टर्ड क्र.:-13/सरगुजा/डीएन/2026-2028-मो. 94062-23001,98265-32611,Email:ghatatighatana11@ gmail.com,Website:www.ghatatighatana.com, (सभी विवादों का न्याय क्षेत्र अम्बिकापुर न्यायालय मान्य होगा)